ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 66 अंक 9 जून 2019 ज्येष्ठ 2076 वार्षिक मूल्य 150 रु०

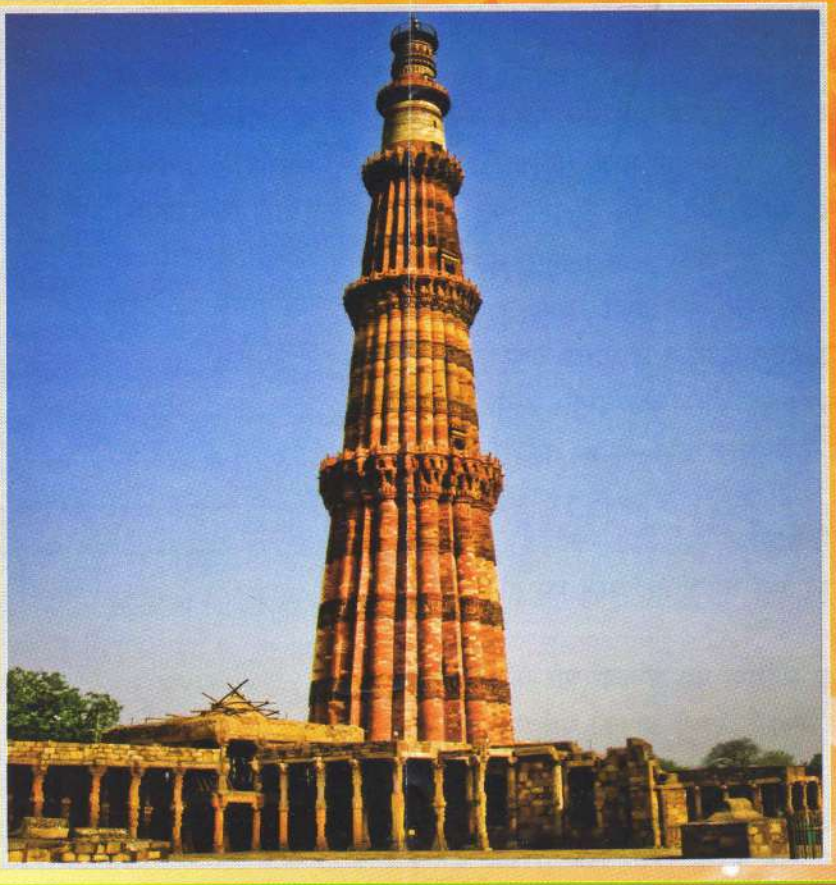

ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर द्वारा गुप्तसम्राट् समुद्रगुप्त के समय बनवाया गया ज्योतिष के केन्द्र सूर्यमन्दिर का मध्यवर्ती भाग सूर्यध्वज, 21 जून को 12 बजे 238 फीट ऊंचे इस ध्वज की छाया नहीं रहती। इस ध्रुवमीनार को कुतुबुद्दीन द्वारा बनाया गया बतला कर भारतीय इतिहास को भ्रमित किया जा रहा है। इसके 27 मन्दिरों को नष्ट करने का पाप तो कुतुबुद्दीन ने अवश्य किया था, मस्जिद में लगे शिलालेख में उसने स्वयं स्वीकार किया है।

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएंगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :66 अंक : 9
जून 2019 विक्रमाब्द 2076
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5119
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,119

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	कश्मीर समस्या का...	5
4.	यदि प्रधानमन्त्री...	8
5.	स्वामी दिव्यानन्दजी...	9
6.	हमारा अभिवादन...	10
7.	अन्धविश्वास की कथा...	13
8.	पाणिनीय व्याकरणे	15
9.	बन्दा बैरागी	21

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

अभयं मित्रादभयममित्रात्,
अभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः,
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अथर्व० 19.15.6।।

विनय

हे जगदीश्वर! इस तेरे जगत् में, इस तेरे न्यायपूर्ण सच्चे शासन में रहते हुवे मुझे कोई भी भय क्यों होना चाहिये? तू सब जगत् में सदा कल्याण ही कल्याण कर रहा है तो फिर मुझे कभी भी कोई डर क्यों होवे? भय करना नास्तिक होना है, तुझ पर अविश्वास करना है, तुझे भुलाना है, तेरा द्रोही होना है। अतः हे मेरे परमप्यारे, कल्याणस्वरूप स्वामी! आज से मैं मन की दुर्बलता छोड़कर अभय रहने का व्रत लेता हूं। मैं अपनी शक्तिभर किसी भी भय के अधीन न होऊँगा। हे मेरे जगदीश्वर! इसमें मेरी सहायता करो। भय न छोड़कर तो मैं संसार में कुछ भी नहीं कर सकता, सत्यपथ पर नहीं चल सकता, कभी भी तेरे दर्शन नहीं कर सकता। अतः हे प्रभो! मुझे ऐसा बल दो कि संसार में किसी भी मनुष्य से मुझे भय न हो; न मित्र से भय हो, न अमित्र से। सत्यपथ पर चलते हुवे मुझे न मित्रों की नाराजगी आदि का भय हो और न अमित्रों द्वारा क्लेश पाने का। तेरे सामने मित्र अमित्र सब एक हैं। तेरे सामने मित्रों के अमित्र हो जाने से क्या डरना और अमित्रों द्वारा जो तू ही मुझ पर विपत् लाता है उससे क्या घबराना! अनिष्ट तो तू मित्र और अमित्र दोनों द्वारा ला सकता है और लाता है। अतः इन दोनों ही द्वारा मुझे भय से बचा अर्थात् मुझे ऐसा बल दे कि मेरे लिये अनिष्ट ही कोई वस्तु न रहे। हे कल्याणमय प्रभो! संसार में अनिष्ट है ही क्या? तुझे भूल जाने और अतएव कल्पना का भय, क्लेश अनिष्ट बना लेने के सिवा सचमुच संसार में कोई भय या अनिष्ट नहीं है। जो कुछ है और जो होगा, वह सच निस्सन्देह शुभ ही है। मेरा निर्बल मन बहुत सी घटित, ज्ञात, परिचित बातों को अनिष्टकर मानकर उनसे तो भयत्रस्त होता ही है, पर वह आगे आनेवाली बातों में सदा अनिष्ट की आशंका करके भी वह यूँही भयपीड़ित बना रहता है। "आगे न जाने क्या होगा," "मेरे इस कर्म की सिद्धि होगी कि नहीं", "कहीं इसका फल, परिणाम बुरा न निकले", इस प्रकार जो मुझमें भय रहता है वह तो बड़ा ही आत्मघातक है। अतः हे मेरे अन्र्यामी! मुझमें अब ऐसा ज्ञान प्रदीप्त कर दो कि मेरे सब मोह हट जायँ और मैं तेरे कल्याणस्वरूप को सदा देदीप्यमान देखता हुवा दिन में या रात में, सदा सब कालों में, सब अवस्थाओं में अभय रहूं। ऐसा बल दो कि अन्धकार हो या प्रकाश, विपत् हो या संपत्, अनुकूलतायें हों या प्रतिकूलतायें मैं इन सब दिशाओं में सदा निर्भय रह सकूँ। संसार भर में, चारों दिशाओं में, किसी भी स्थान पर अब कोई वस्तु मुझे भय व संकट दे सकनेवाली न रहे, सब जगह मित्रता ही मित्रता हो, कल्याण ही कल्याण हो, अभय ही अभय हो।

शब्दार्थ

(मित्रात् अभयं अमित्रात् अभयं) मुझे मित्र से भय न हो, अमित्र से भी भय न रहे। (ज्ञातात् अभयं) जो मालूम होगया है उससे भय न हो, और (यः पुरः अभयं) जो आगे है; आनेवाला है उससे भी भय न हो। (नः नक्तं अभयं, दिवा अभयं) हमें रात में भी अभय हो, दिन में भी अभय हो (सर्वा आशाः) सब दिशायें सब दिशाओं के वासी प्राणी (मम मित्रं भवन्तु) मेरे मित्र होजायँ, मेरे मित्र रूप रहें।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का हिन्दुत्व

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अनेक लक्ष्यों में एक प्रमुख लक्ष्य है हिन्दुत्व की रक्षा करना। संसार में जितने भी मत, सम्प्रदाय, पन्थ और तथाकथित धर्म हैं उन सबके गुरु, धर्मग्रन्थ, मान्यता और सिद्धान्तों में विभिन्नता न होकर एकरूपता दिखाई देती है। जैसे ईसाई लोग बाइबिल और ईसामसीह को मानते हैं, मुसलमान लोग खुदा, उसके एकमात्र पैगम्बर मुहम्मद साहब और कुरान में विश्वास रखते हैं, सिक्खों का धर्मग्रन्थ गुरुग्रन्थ साहब तथा दस गुरु मान्य हैं, बौद्ध लोग महात्मा बुद्ध तथा उनके त्रिपिटक आदि उपदेशों के संग्रह में आस्था रखते हैं, जैन लोग ऋषभदेव से लेकर महावीर स्वामी तक के 24 तीर्थंकरों और उनके विवेकसार आदि अनेक ग्रन्थों तक सीमित हैं, इसी प्रकार पारसी तथा जिन्दावस्था के प्रति श्रद्धावानों की गणना भी की जा सकती है। कबीरपन्थी, दादूपन्थी, रामस्नेही और नागा बाबाओं का अपना अलग ही सम्प्रदाय है। इसी प्रकार बापू आशाराम, रामरहीम, रामपालदास, निरंकारी सन्त आदि अनेक मतमतानतर गिने जा सकते हैं। ये सब अपने अपने स्वीकृत गुरु तथा धर्मग्रन्थों तक ही सीमित हैं। ये सभी कबीर पन्थी आदि भी हिन्दू कहलाते हैं, तो हिन्दू का वास्तविक लक्षण कौन-सा है?

इस दृष्टि से हिन्दू कहे जाने वाले लोगों में धर्मग्रन्थ तथा गुरुओं की एकरूपता लक्षित नहीं होती। हिन्दुओं में भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्य का विचार न करने वाले वाममार्गी भी हैं, मूर्तिपूजा करने वाले और अवतार मानने वाले भी हैं, छूआ-छूत को मानने वाले अभी तक भी हैं; जन्मना-जाति पाति को प्राथमिकता देने वाले भी विद्यमान हैं, कोई वेद को मानता है, कोई गीता को धर्मग्रन्थ मानकर न्यायालय में इसी पर हाथ रखकर साक्षी देना सचाई मानते हैं, कोई पुराणों को ही प्रामाणिक मानते हैं। कोई शिवजी को, कोई विष्णु को और उसके अवतारों को, कोई राम को, कोई कृष्ण को, कोई हनुमान् को भगवान् तथा इष्ट देवता मानते हैं।

इस प्रकार इस अनेक रूपता को देखते हुए हिन्दुत्व की एक परिभाषा करना कठिन हो जाता है। अतः राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेताओं से यह जिज्ञासा है कि हिन्दुत्त्व की एक सर्वमान्य और एकरूपता वाली परिभाषा स्थापित करने का क्या उपाय है।

आप लोग जिस स्वामी विवेकानन्द जी को आदर्श पुरुष मानते हो, उन स्वामी जी के विचार हिन्दुत्व और उसके रक्षकों के प्रति क्या हैं, यह भी देख लीजिये। स्वामी विवेकानन्द साहित्य जो अनेक भागों में छपा है, उसके अध्ययन से स्वामी विवेकानन्दजी के जो विचार हैं, उन्हें पाठक देख सकते हैं-

1. जिन (रामकृष्ण परमहंस) की पवित्रता, प्रेम और ऐश्वर्य का राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, चैतन्य आदि में कणमात्र प्रकाश है, उनके निकट हरामी.....बुद्ध, कृष्ण आदि का तीन चौथाई हिस्सा कपोल कल्पना के सिवाय और क्या है। (चतुर्थ खण्ड, पृ० 354)

2. .....रामकृष्ण परमहंस ईश्वर के बाप थे, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं। रामकृष्ण परमहंस का अध्ययन किये बिना वेद, वेदान्त, भागवत और अन्य पुराणों में क्या है, यह समझना असम्भव है। वेदों और वेदान्त के वे जीवित भाष्य थे। (द्वितीयखण्ड पृ० 360)

3. तूने जिन (राम, कृष्ण, श्री गौरांग, बुद्धादि) का नाम लिया मैं श्री रामकृष्ण को उन सबसे बड़ा मानता हूँ। (षष्ठखण्ड पृ० 139)।

4. साधु संन्यासी तथा ब्राह्मण दुष्टों ने देश को रसातल में पहुंचाया है, देहि-देहि की रट लगाना तथा चोरी बदमाशी करना - किन्तु हैं धर्म के प्रचारक। धन कमायेंगे, सर्वनाश करेंगे, साथ ही यह भी कहेंगे कि हमें न छूना (चतुर्थखण्ड पृ० 308)।

5. वर्तमान हिन्दुओं का धर्म न तो वेद में है और न पुराण में, न भक्ति में और न मुक्ति में- धर्म तो भात की हांडी में समा चुका है, यही वह दलदल है। चतुर्थ खण्ड पृ० 310।

6. भगवान् का अवतार कहीं भी तथा किसी भी समय नहीं होता (षष्ठखण्ड, पृ० 176)।

7. उन पाखण्डी पुरोहितों को, जो सदैव उन्नति के मार्ग में बाधक होते हैं, ठोकरें मारकर निकाल दो। क्योंकि उनका कभी सुधार नहीं होगा, उनके हृदय कभी विशाल नहीं होंगे। (प्रथमखण्ड, पृ० 399)।

8. वेदान्त के रचयिता महर्षि वेदव्यास, वेदान्त के भाष्यकार शंकराचार्य व रामानुज ब्राह्मण होने के कारण संकीर्ण हृदय वाले थे। बुद्ध व ईसा ईश्वर होने से श्रद्धा के पात्र हैं। (दशमखण्ड पृ० 41 पर भाव)।

9. अब मेरा शरीर तेजी से घटता जा रहा है, क्योंकि मैं केवल मांस पर ही जीवित रहने को विवश हूँ (षष्ठखण्ड पृ० 316)।

10. बुद्ध ने हमारा सत्यानाश किया और ईसा ने ग्रीस और रोम का। (दशम खण्ड, पृ० 56)।

11. जब मनुष्य दुर्बल और क्षीण हों, तब हवन में घृत जलाना अमानुषिक कर्म है। (दशमखण्ड, पृ० 501)।

12. शंकराचार्य में ब्राह्मणत्व का अभिमान बहुत था। एक दक्षिणी पुरोहित जैसे ब्राह्मण थे और क्या? .... फिर उनका हृदय देखो, शास्त्रों में पराजित कर कितने बौद्ध श्रमणों को आग में झोंक कर मार डाला .... शंकराचार्य के ये कार्य संकीर्ण दीवानेपन से निकले हुए पागलपन के अतिरिक्त और क्या हो सकते है? (षष्ठखण्ड, पृ० 82)।

13. यदि सभी मनुष्य एक ही धर्म, उपासना की एक ही सार्वजनीन पद्धति और नैतिकता के एक ही आदर्श को स्वीकार कर लें तो संसार के लिए यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात होगी। (कर्मयोग पृ० 32)।

14. मैं किसी भी सम्प्रदाय का विरोधी नहीं हूँ, बल्कि नाना सम्प्रदायों के रहने से मैं सन्तुष्ट हूँ और मेरी विशेष इच्छा है कि सभी की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जाये। (धर्म रहस्य पृ० 73)।

15. वे (ईसाई व मुस्लिम) हमें चाहे जितनी घृणा की दृष्टि से देखें, चाहे जितनी पशुता दिखायें, चाहे जितनी निष्ठुरता दिखावें अथवा अत्याचार करें ... पर हम ईसाइयों के लिए गिरजे और मुसलमानों के लिए मस्जिदें बनवाना नहीं छोड़ेंगे ....मुसलमानों की भारत विजय पद-दलितों और गरीबों का मानो उद्धार के लिए हुई थी। यही कारण है कि एक पंचमांश जनता मुसलमान होगई। यह सारा काम तलवार से नहीं हुआ। यह सोचना कि यह सभी तलवार और आग का काम था, बेहद पागलपन होगा। (पंचमखण्ड पृ० 84, 187)।

16. मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जो आधुनिक हिन्दू धर्म कहलाता है और जो दोषपूर्ण है वह अवनत बौद्धमत का ही एक रूप है। हिन्दूओं को साफ समझ लेने दो, फिर उन्हें उसको त्याग देने में कोई आपत्ति न होगी। (षष्ठखण्ड पृ० 318)।

17. हमारे देश के लोगों में न विचार है, न गुणग्राहकता। भीषण ईर्ष्या है और उनकी प्रकृति सन्देहशील है। (द्वितीय खण्ड पृ० 326)।

18. (भारत के लोग) मूर्ख, मतिभ्रष्ट और स्वार्थपरता की मूर्ति हैं। (द्वितीय खण्ड पृ० 338)।

19. मेरे देशवासियों में अभी तक मनुष्यता का विकास नहीं हुआ है ... यहां (अमेरिका में) मुझे खाने, पहनने को मिल रहा है। ....ऐसी सहृदय जाति को छोड़ कर पशुप्रकृति, अकृतज्ञ, बुद्धिहीन, अनन्तकाल से कुसंस्कार में फंसे हुए, दयाहीन, ममता रहित, भाग्यहीनों के देश में क्यों जाने लगा। (द्वितीयखण्ड पृ० 377)।

20. कोई देशभक्तिहीन राष्ट्र देखा है, जैसा कि भारत है (चतुर्थखण्ड पृ० 282)।

21. हिन्दू भिखारियों से भीख मत मांगो। (चतुर्थखण्ड पृ० 283)।

22. हिन्दू निर्दयी, कायर, नास्तिक हैं (चतुर्थखण्ड पृ० 246)।

23. भारत में व्यावहारिक बुद्धि की कमी है ...जहाँ से मैं भारत पर आक्रमण करना चाहता हूँ (षष्ठखण्ड पृ० 316)। इत्यादि अनेक प्रमाण हैं, जो विस्तारभय से नहीं दिखाये जा रहे।

स्वामी विवकानन्द जी को आदर्श महापुरुष मानने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेताओं और उसकी राष्ट्रीय पार्टी भारतीय जनता पार्टी के प्रमुखों से यह प्रश्न है कि आप अपने आदर्श महापुरुष की विचारधारा से किस सीमा तक सहमत हैं, यदि हैं तो इनकी भावनानुसार कार्य करें, यदि सहमत नहीं है तो भारतभूमि और उसके निवासियों के प्रति ऐसा घृणित और तुच्छ विचार रखने वाले गुरु को आदर्श न मानकर उसे छोड़ देने के लिए विचार करना चाहिए। पूर्वाग्रह से मुक्ति हेतु आत्मिक साहस और सत्य को ग्रहण करने की दृढ भावना होनी अत्यावश्यक है।

आप लोग ईश्वर के स्थान पर निर्जीव मूर्ति को मानते हो, वेद के स्थान पर गीता को महत्त्व देते हो तथा देश को कुरीतियों से हटाने वाले महर्षि दयानन्द की उपेक्षा करके स्वामी विवेकानन्द को अनावश्यक महत्त्व देते हो, यह गुरुडम पन्थी भावना है, इससे जनता में सत्य की अपेक्षा पाखण्ड को बढ़ावा मिलेगा।

यदि सावधान नहीं हुए तो लोकसभा आदि में चुनावों में सभी दलों के प्रत्याशी जड़मूर्तियों से विजय की कामना करने जैसी मूर्खतापूर्ण तथा दिखावा करने जैसा व्यवहार करते ही रहेंगे। नन्दी (बैल) की मूर्ति के कान में अपनी विजय की और विरोधी की पराजय की कामना करने से क्या वह जड़मूर्ति प्रार्थना सुन लेगी? यह अविद्या और अज्ञान है। इससे छुटकारा पाने में ही कल्याण है।

शासकों के नियन्ता और शासकों को जनता के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसा अपनी सन्तान की सर्वविध उन्नति हेतु करते हैं। आपके प्रयत्न से जब देश से अविद्या, पाखण्ड, अनाचार, भ्रष्टाचार और जन्मना जाति मानने का अभिमान दूर हो जायेगा तो देश पुनः संसार का सिरमौर बन जायेगा।

आपको सदसद् विवे किनी बुद्धि प्राप्त हो, इसी शुभकामना के साथ आपके द्वारा भविष्य में देशोन्नति हेतु उठाये जाने वाले सम्भावित सही कदम से प्राप्त फल को देखने की चिकीर्षा वाला आपका हितैषी –

– विरजानन्द दैवकरणि
9416055702

कश्मीर समस्या का मूलकारण

☆ ब्रिगेडियर आरपी सिंह

बीते दिनों जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने राज्य के लिए अलग राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री पदों की मांग कर चुनावी माहौल को और गर्म करने का काम किया। उनके पिता फारूक अब्दुल्ला भी यदा-कदा भारत विरोधी ब्यान देते आए हैं। 14 अप्रैल को ही फारूक ने कहा, ''जम्मू-कश्मीर पाकिस्तान के हिस्से में जा रहा था और उनके पिता शेख अब्दुल्ला ने राज्य का भारत में विलय कराया।'' उनका यह बयान ऐतिहासिक रूप से गलत है, क्योंकि जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय में शेख अब्दुल्ला की कोई भूमिका नहीं थी। राज्य का भारत में विलय 26 अक्टूबर, 1947 को जम्मू-कश्मीर के महाराज हरिसिंह द्वारा 'विलय की संधि' पर हस्ताक्षर से संभव हुआ था। उमर अब्दुल्ला की तरह महबूबा मुफ्ती भी अनुच्छेद 35ए और धारा 370 को खत्म करने की स्थिति में गंभीर नतीजे भुगतने की खुलेआम धमकी दे रही हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा करते ही जम्मू-कश्मीर का भारत से रिश्ता खत्म हो जाएगा। वास्तव में जम्मू-कश्मीर की समस्याओं की जड़ें तीन सियासी खानदान से जुड़ी हैं। एक नेहरू गांधी परिवार, दूसरा अब्दुल्ला परिवार और तीसरा मुफ्ती परिवार। समस्याओं का एक सिरा पाकिस्तान से भी जुड़ा है। 1946 में प्रधानमंत्री बनने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने

अपने मित्र शेख अब्दुल्ला का खुला समर्थन किया। यह वही अब्दुल्ला थे जिन्होंने जिन्ना की मुस्लिम लीग की तर्ज पर 1932 में ऑल जम्मू एंड कश्मीर मुस्लिम कांफ्रेंस की स्थापना की थी। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के लिए अलग इस्लामी झंडा भी पेश किया। बाद में नेहरू के कहने पर उन्होंने धर्मनिरपेक्षता का लबादा ओढ़ने के लिए अपने संगठन से मुस्लिम नाम हटाकर 1939 में उसे नेशनल कांफ्रेंस बना दिया। नाम बदलने के बाद भी उसका इस्लामी स्वरूप कायम रहा।

जब राज्य विरोधी गतिविधियों के कारण महाराजा हरिसिंह ने अब्दुल्ला को जेल में डाल दिया तो उन्हें रिहा कराने के लिए नेहरू ने कश्मीर जाने का फैसला किया और वहां महाराजा के विरोध में उतर आए। यह एक भयावह भूल थी। डीपी मिश्रा को प्रेषित एक पत्र में सरदार पटेल ने लिखा, 'उन्होंने (नेहरू) ने हाल में कई ऐसे काम किए जिससे हमें शर्मिंदगी उठानी पड़ी है। कश्मीर में उन्होंने जो कदम उठाए वे भावनात्मक आवेग का परिणाम हैं। इससे हालात दुरुस्त करने के लिए हम पर दबाव बढ़ गया है।' सितम्बर 1947 में हरिसिंह ने कश्मीर के भारत में विलय की पेशकश की, लेकिन बात नहीं बनी, क्योंकि नेहरू न केवल अब्दुल्ला की रिहाई, बल्कि जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री पद पर उनकी ताजपोशी भी चाहते थे। महाराजा को यह मंजूर न था। पाकिस्तान ने सितम्बर 1947 में जम्मू-कश्मीर पर हमले की योजना बनानी शुरू कर दी। पाकिस्तानी हमले की योजना से संबंधित एक पत्र गलती से मेजर कलकत के हाथ लग गया जो उस समय बन्नू में तैनात थे। वहां से भागकर वह दिल्ली आए और शीर्ष एजेंसियों को अवगत कराया। यह जानकर पटेल और तत्कालीन रक्षा मंत्री बलदेव सिंह घुसपैठियों को रोकने के लिए जम्मू-कश्मीर सीमा पर सेना भेजना चाहते थे, लेकिन नेहरू ने इन्कार कर दिया। जनमत संग्रह पर स्वीकृति और जम्मू-कश्मीर के मामले को संयुक्त राष्ट्र के मंच पर ले जाना भी नेहरू की बड़ी गलतियां रही। अगर नेहरू ने अनावश्यक दखल न दिया होता तो आज समूचा जम्मू-कश्मीर भारत के पास होता। अपने रुख पर अड़े रहने के बाद अब्दुल्ला स्वतंत्र रूप से जम्मू-कश्मीर पर शासन करना चाहते थे और उन्होंने पाकिस्तान के साथ अपनी कड़ियां जोड़ ली। जब नेहरू को उनकी गुप्त योजना की भनक लगी तो उन्हें भी अब्दुल्ला को जेल में डालना पड़ा।

अगस्त, 1953 में जब शेख अब्दुल्ला गिरफ्तार हुए तब फारूक की उम्र 16 साल थी उन्हें अपने पिता की सभी योजनाओं की जानकारी थी। नेहरू के बाद इंदिरा गांधी को पाकिस्तान को पूरी तरह बांट देने का एक बढ़िया अवसर मिला जब 16 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान के 93,500 सैनिकों ने ढाका में भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था। इससे पाक सेना का मनोबल रसातल में था। अगर भारत उस लड़ाई को और 72 घंटे खींच देता तो गिलगित-बाल्टिस्तान सहित पाकिस्तान के कब्जे वाले पूरे कश्मीर को उसके चंगुल से छुड़ा लिया जाता।

उन्होंने 1972 के शिमला सझौते में सैन्य मोर्चे पर मिली बढ़त को कूटनीतिक मेज पर तब गंवा दिया जब जम्मू-कश्मीर के स्थाई समाधान के लिए कोई दबाव नहीं बनाया। इसके बाद 1975 में इंदिरा गांधी-शेख अब्दुल्ला समझौता उनकी एक और बड़ी भूल साबित हुई। इस समझौते के तहत शेख को जम्मू-कश्मीर का मुख्यमंत्री बनाया गया। यह समझौता कश्मीर के लिए विध्वंसक साबित हुआ, क्योंकि इससे जनमत संग्रह वाला गिरोह फिर से सक्रिय हो गया और इसका परिणाम राज्य में आंतरिक तबाही, अशांति और इस्लामीकरण के रूप में निकला। पाकिस्तानपरस्त लोगों को अहम पदों पर नियुक्त किया जाने लगा और पुलिस बल अल-फतह के शरारती तत्वों से प्रताड़ित होने लगा। शेख के निधन के बाद फारूक उनकी कुर्सी पर काबिज हो गए। उन्हें इंदिरा गांधी ने जुलाई 1984 में बर्खास्त कर दिया और उनके बहनोई जीएम शाह को मुख्यमंत्री बनाया। अक्टूबर 1984 में राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। उन्होंने 1986 में शाह सरकार को बर्खास्त कर दिया और राजीव-फारूक समझौते के तहत फिर से फ़ारूक अब्दुल्ला को मुख्यमंत्री बनाना तय किया। खुफिया एजेंसियों ने इसके लिए चेताया, लेकिन राजीव गांधी ने उनकी अनदेखी की। फारूक को सत्ता में लाने के लिए 1987 चुनावों में धांधली हुई जिससे कश्मीरी युवाओं ने हथियार उठा लिए। 1989-90 में मुफ्ती मोहम्मद सईद केंद्रीय गृह मंत्री थी। कश्मीर के राष्ट्रविरोधी तत्वों के प्रति वे नरम थे। 8 दिसम्बर 1989 को मुफ्ती की बेटी रुबैया सईद का कथित अपहरण हुआ। रुबैया की रिहाई के एवज में जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के 13 दुर्दांत आतंकियों को रिहा किया गया जिन्होंने अलगाववाद को भड़काने का काम किया।

एक अर्से से सीमा पार से कश्मीर में अलगाववादियों की मदद से पानी कर तरह पैसा बहाया जा रहा है। कश्मीर में हालिया गतिरोध इन्हीं तत्त्वों की वजह से पैदा हुआ है। मोदी सरकार ने कई अहम कदम उठाए हैं जिनके चलते जम्मू-कश्मीर में स्थाई समाधान के लिए कूटनीतिक और घरेलू स्तर पर अनुकूल माहौल बनने लगा हैं। पाकिस्तान की परमाणु धमकी की भी हवा निकल गई है। वैश्विक स्तर पर अलग-थलग पड़ा पाकिस्तान बालाकोट हमले के बाद सहम गया है। जनवरी 2018 के बाद से सुरक्षा बलों ने भी 300 से अधिक आतंकियों को निपटाकर वर्चस्व कायम किया है। अलगाववादी नेताओं के खिलाफ सख्ती और नियंत्रण रेखा पर हालात को संभालने के सकारात्मक परिणाम हासिल होंगे। वंशवादी प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए अगली सरकार को धारा अनुच्छेद 370 और 35ए को निश्चित रूप से समाप्त करना चाहिए। इसके साथ ही राज्य में नए नेतृत्व को भी उभारा जाना चाहिए और पुरानी भूलें नहीं दोहराई जानी चाहिए।

(लेखक सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी हैं)

दैनिक जागरण 26.4.2019 से साभार

यदि प्रधानमन्त्री मोदी जी ऐसा नहीं करते.....

इस बार के लोकसभा के चुनावों ने भारतीय संस्कृति के बाह्य रूप की उपासिका और अवैदिक मान्यताओं वाली, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के निर्देशानुसार चलने वाली भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत से भी अधिक समर्थन देकर जिताया है, यह इस पार्टी के लिए गौरव की बात है। परन्तु इस जीत के पूर्व तथा पश्चात् जो अज्ञानान्धकार को बढावा देने वाली बात हुई है, वह अशोभनीय है। जैसे चुनाव से पूर्व मन्दिरों आदि में जाकर जड़मूर्तियों से जीतने का आशीर्वाद लेने जैसी असम्भव बातों के प्रति आस्था दिखाई गई।

जब मान्यवर श्री मोदी जी ने जीवित जागरित देवीस्वरूपा पूज्या माता जी का हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त कर लिया था तो पुनः काशी में जाकर जड़मूर्ति की पूजा करके उससे आशीर्वाद मांगना, दूध जैसे पवित्र और पुष्टिकारक पदार्थ को पत्थर पर व्यर्थ बहाया जाना आदि कार्य बुद्धिगम्य प्रतीत नहीं हुए। आशीर्वाद तो जनता ने दे ही दिया था, पुनः अन्यत्र जाने की क्या आवश्यकता रह गई थी। भगवान् तो सर्वत्र है, उसी की कृपा से यह सुअवसर प्राप्त हुआ है, वह केवल मन्दिरों में ही नहीं रहता।

यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार देश के करणधार श्री मोदी जी ही यदि पत्थर की निर्जीव मूर्ति के आगे नतमस्तक होकर आशीर्वाद मांगेंगे तो आपका अनुकरण करने वाले और सारे देश में 'मोदी-मोदी' की रअ लगाने वाले करोंड़ों लोग अज्ञानान्धकार में गिरकर कर्त्तव्य कर्म न करके जड़मूर्तियों से ही आशीर्वाद लेकर सफल होने की कामना करने लगेंगे।

जिस मूर्ति पूजा के कारण भारत सैकड़ों वर्ष तक पराधीन रहा, इन मूर्तियों पर चढाया गया सोना-चांदी-रुपया-पैसा, बहुमूल्य आभूषण और हीरे जवाहरात विदेशी आक्रान्ता लूट कर ले गये, हजारों लोगों की निर्मम हत्या कर दी, बंधक बनाकर ले गये, बलात्कार की घटनायें हुईं, बंधकों से मलमूत्र उठाने का कार्य भी लिया, इस भांति के अनेक कष्टदायक कार्य भारतीय निरपराध जनता को सहन करने पड़े, उसी मूर्तिपूजा को हमारे प्रधानमन्त्री जी बढावा दे रहे हैं, तो सामान्य जनता इस अज्ञान से कैसे दूर रह पायेगी। जनता अपने अधिकारियों का अनुकरण करती है। अतः शासक का यह प्रमुख कर्त्तव्य है कि पुत्र समान अपनी जनता को अज्ञान से हटाकर सत्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा दे।

अतः प्रधानमन्त्री श्री मोदी जी से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने देश की जनता को अज्ञानान्धकार से हटाकर सही और बुद्धिगम्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें, जिससे भारत अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर सके।

– विरजानन्द दैवकरणि

9416055702

स्वामी दिव्यानन्दजी नहीं रहे

गुरुकुल झज्जर और गुरुकुल कांगड़ी के विद्वान् और योगी स्नातक मेरे सहपाठी स्वामी दिव्यानन्दजी का लम्बी बिमारी के बाद 28 मई 2019 को पांतजल योग धाम, ज्वालापुर (हरद्वार) में निधन हो गया। आप 81 वर्ष के थे। सन् 1939 में नंगलानरू (मैनपुरी) में जन्म लेकर इण्टर कालेज सिरसांगज में पढते-पढते ही आपको वैराग्य होगया और चुपचाप गृह त्याग कर गुरुकुल झज्जर में अध्ययन हेतु आगये। यहां दर्शनाचार्य तक शिक्षा पाकर गुरुकुल कांगड़ी से योग विषय में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। योग विषय में ही गढवाल के श्रीनगर विश्वविद्यालय से डी.लिट् की उपाधि ग्रहण करके भारत और विदेशों में जाकर सैंकड़ों योग शिविरों के द्वारा हजारों लोगों को योग के प्रति श्रद्धावान् बनाया। भारत में होने वाले अनेक योग एवं कवि सम्मेलनों में सक्रिय भाग लेकर अपनी विद्वत्ता की छाप छोड़ी।

गत कुछ महीनों से अचानक अस्वस्थ होकर उपचार कराते रहे परन्तु उचित लाभ नहीं हुआ। अस्तु! उपचाराधीन अवस्था में ही 28 मई 2019 को इन्होंने अन्तिम विदाई लेली।

कनखल के श्मशानघाट में गंगा के किनारे 29 मई 2019 को सायं 5 बजे सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से इनका अन्त्येष्टि कर्म सम्पन्न हुआ।

अन्त्येष्टि के समय आर्यजगत् के अनेक साधु, महात्मा, विद्वान् आदि विद्वानों ने उपस्थित होकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। जैसे- स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली, स्वामी आर्यवेशजी सार्वदेशिक सभा, स्वामी ओम्वेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी विधायक, स्वामी चित्तेश्वरानंदजी, आचार्य ऋषिपाल जी इन्द्रप्रस्थ, स्वामी मेघानन्दजी ज्वालापुर, डॉ० वेदव्रत आलोक दिल्ली, डॉ० जयदेव ज्वालापुर, डॉ० महावीर अग्रवाल, डॉ० रूपकिशोर गुरुकुल कांगड़ी, डॉ० सोमदेव शतांशु गुरुकुल कांगड़ी, स्वामी धर्मानन्द सिरसा, वैद्य हंसराज हरद्वार, डॉ० अजय आर्य बहादराबाद, रणवीर शास्त्री बवाना, रामपाल शास्त्री दिल्ली, जितेन्द्र पुरुषार्थी दिल्ली, रत्नदेव शास्त्री सोनीपत, आर्यसमाज जनकपुरी दिल्ली के अनेक सदस्य तथा ज्वालापुर के स्थानीय शतशः आर्यपुरुष और आर्यदेवियां उपस्थित थे।

उपस्थित जनसमूह को डॉ० महावीर अग्रवाल, स्वामी आर्यवेश, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी चित्तेश्वरानन्द और स्वामी ओम्वेश ने सम्बोधित किया। इनके सम्बोधनो का सार यह था कि जिस प्रकार स्वामी दिव्यानन्दजी ने पूरा जीवन योग के प्रचार-प्रसार में लगाते हुए अपने स्वजीवन को भी सफल बनाया इसी प्रकार उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये और अधूरे छूटे हुए कार्य को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिये। इसके लिए योगधाम के उपाध्यक्ष डॉ० वेदव्रत आलोक से प्रार्थना की गई कि आप सदस्यों की सभा बुलाकर इस कार्य को पूरा करें।

अन्त में दो मिनट तक आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना के अनन्तर शान्तिपाठ के साथ कनखल का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-विरजानन्द दैवकरणि
मो० - 9416055702

हमारा अभिवादन नमस्ते ही क्यों?

वेदों में 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग है उसके बाद ऋषियों के ग्रन्थों में भी 'नमस्ते' का ही प्रयोग है और सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में भी 'नमस्ते' का ही प्रयोग है और अभी मनुष्य-मनुष्य के बीच में परस्पर अभिवादन करने के लिए 'नमस्ते' शब्द बहुतायात रूप में प्रचलित है। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त सब मनुष्य परस्पर 'नमस्ते' ही करते थे। महाभारत काल के उपरान्त भारत के पतनकाल में अनेक मत-मतान्तर फैले परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति व संस्कारों में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। जो लोग अनपढ़ थे उन्होंने तो मतमतान्तरों द्वारा फैलाई गई भ्रान्तियाँ चाहे किसी भी विषय में हों को ज्यों का ज्यों स्वीकारा ही, लेकिन पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने भी इन भ्रान्तियों को बिना किसी विरोध के अपनी संस्कृति मान कर स्वीकार कर लिया। यही हमारी संस्कृति के बिखर जाने का बड़ा कारण बना।

सनातन काल में ही 'नमस्ते' प्रचलित रहा है न कि 'नमस्कार'। व्याकरण की दृष्टि से 'नमस्ते' शब्द नमः+ते से मिलकर बना है। 'नमः' के जो विसर्ग (:) हैं, सन्धि में विसर्गों को आधा 'स्' हो जाता है। इसलिए 'नमस्ते' उच्चारित होता है। नमस्ते में जो 'ते' शब्द है वो युष्मद् शब्द का चतुर्थी विभक्ति के एकवचन में तुभ्यम् के स्थान पर विकल्प रूप में प्रयोग होता है। जिसका अर्थ होता है आपके लिए या तुम्हारे लिए, नमः का अर्थ सम्मान करता हूँ ऐसा है। नमस्कार के प्रयोग में अहंकार ही तो शेष रहता है झुकता नहीं। ऋषि मुनियों ने कभी भी नमस्कार शब्द का प्रयोग नहीं किया क्योंकि ये संज्ञा है न कि वाक्य, जबकि नमस्ते अपने आप में शब्द होते हुए भी एक पूरा वाक्य है जिसका अर्थ है मैं आपका सम्मान करता हूँ। चतुर्थी विभक्ति के साथ नमः का प्रयोग किया जाता है जैसे :- गुरुवे नमः, शिवाय नमः, रामाय नमः आदि। लेकिन परमात्मा के केवल मुख्य और निज नाम 'ओ३म्' के साथ चतुर्थी विभक्ति नहीं लगती इसलिए 'ओ३म् नमः' उच्चारण किया जाता है ओमाय नमः नहीं।

रही बात हाथ जोड़कर नमस्ते करने की तो यह अपना भाव स्पष्ट करने की बाह्य प्रक्रिया है। लोक व्यवहार में बुद्धि से, हृदय से एवं शरीर द्वारा कर्म करके नमस्ते की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है। आजकल तो भारतीय बच्चों पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हाय, हैलो की संस्कृति घर करती जा रही है। अभिवादन शब्द के सही अर्थ को न समझकर अनभिज्ञ लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है और अभिवादन को व्यक्त करने वाला 'नमस्ते' शब्द आंशिक रूप से दब गया है। इसके स्थान पर अभिवादन की दूषित परिपाटियों की बाढ़ों ने अपना प्रभाव जमा लिया। अभिवादन में हाथ से हाथ मिलाकर हैलो या हाय कहना भी इन्हीं दूषित प्रणालियों में से एक है। हाय, यह शब्द सुनते ही तो ऐसा लगता है मानो किसी के मरने की खबर सुन ली हो और हेलो शब्द तो केवल टेलीफोन आविष्कारक की पत्नी का नाम है उसका कोई अर्थ तो निकलता नहीं। इसके अतिरिक्त परस्पर हाथ मिलाने की प्रक्रिया में समय भी अधिक व्यय होता है एवं संक्रामक रोग भी प्रसारित हो सकता है। इंग्लैंड से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'न्यू इंग्लैंड जनरल ऑफ मेडिसन' में अनुभवी डॉक्टरों ने लोगों को अपनी राय देते हुए कहा है कि - 'सौ में से चालीस लोगों को जुकाम के कीटाणु हाथ मिलाने से ही पकड़ लेते हैं। इसलिए सदैव हाथ जोड़कर नमस्ते ही करें हाथ मिलाने वालों से सावधान रहें। वैसे भी हाथ जोड़कर 'नमस्ते' कहकर किए जाने वाले अभिवादन में जो आत्मीयता झलकती है वह अन्य में नहीं। पं० अयोध्याप्रसाद जी वैदिक

मिश्नरी के शब्दों में इसकी व्याख्या इस प्रकार है। मेरे मस्तिष्क में जितना ज्ञान है, हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्रेम है, उस सबके साथ में आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूँ। हार्दिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक अभिवादन नमस्ते करने में जहाँ व्यक्ति छुआछूत के विभिन्न रोगों से बचता है वहाँ इसके साथ किसी अज्ञात व्यक्ति से मिलते समय अधिक सुरक्षित भी रहता है।

परमपिता परमात्मा को भी नमस्कार को किया जाता है लेकिन हमारी आँखें उस समय बंद होती हैं, परमेश्वर का ध्यान करने के लिए, जो कि हाथ जोड़ने की बजाए ज्ञान मुद्रा में या अंजलि मुद्रा में बैठकर आसानी से किया जा सकता है। लेकिन आज हमारे देश के पढ़े लिखे स्नातक हों या अनपढ़ या वेदों को आधार मानते हुए भी अनजान बनकर अपनी मनमानी करने वाले ढोंगी पण्डित या गुरुवादी सबने अपने-अपने हिसाब से अपना-अपना अभिवादन बना लिया जैसे जय राम जी की, राम-राम जी, जय सियाराम, जय गोपाल जी, जय राधे-राधे, जय श्री कृष्ण, जय माता की, सलाम वालेकुम, आदाब अर्ज, गुड-मॉर्निंग, गुड-नाइट, गुड-आफ्टरनून, जय गुरुदेव, राधास्वामी, धन-धन सतगुरु तेरा ही आसरा, आदि-आदि। यह सब प्रकार के अभिवादन व्यक्तिवाचक, क्षेत्रीयवाचक, वर्गवाचक हैं जो साम्प्रदायिकता, संकीर्णता एवं जातिवाद को उभारने वाले होने से देश व समाज के लिए एक अलगाववादी राष्ट्रीय रोग है, जिसका वायरस निरंतर फैलता ही जा रहा है। आज हमारे देश को पुनः सोने की चिड़िया कहलाने के लिए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की जरूरत है जो उपर्युक्त अभिवादनों के प्रयोग करने से खतरे में पड़ जाती है। विभिन्न अभिवादनों के प्रयोग में कुछ लोगों का कहना है कि यह तो अपनी-अपनी विचारधारा है, उनका यह कहना अनुचित है क्योंकि विचारों का एक होना मित्रता को प्रगाढ़ करता है। विचारधारा में अन्तर वैचारिक टकराव व मित्रता में दरार पैदा करके अलगाववाद को ही उत्पन्न करता है।

और यदि मान भी लिया जाये कि राम, कृष्ण, राधे-राधे आदि उपर्युक्त अभिवादन पहले से चले आ रहे हैं तो क्या ये अभिवादन करने वाले लोग बता सकते हैं कि राम व कृष्ण के जन्म से पूर्व व उनके जीवनकाल में उनके माता-पिता किस शब्द का प्रयोग कर अभिवादन करते थे। गुरुओं व ढोंगी पण्डितों के द्वारा फैलाए गए अभिवादनों का भी उनसे पहले होना साबित ही नहीं हो सकता क्योंकि उनके द्वारा फैलाए गए अभिवादन भी उनके द्वारा फैलाए गए ढोंग के बाद ही पनपे। इसके अतिरिक्त उपर्युक्त अभिवादनों के प्रयोग से सामने वाले व्यक्ति का सम्मान ही नहीं होता। हम यह नहीं कर रहे कि महापुरुषों राम, कृष्ण आदि का नाम नहीं लेना चाहिए परन्तु समय स्थान व परिस्थिति का भी ध्यान रखना हमारा ही कर्त्तव्य है जय श्री राम करके हम यह तो दर्शाते हैं कि हम राम भक्त हैं या राम को अपना आदर्श मानते हैं लेकिन अपने आदर्श स्वरूप राम जैसे महान् पुरुषों से सम्बन्धित सभी ऐतिहासिक जानकारी रखना भी हमारा कर्त्तव्य है। उदाहरण स्वरूप - कहा जाता है कि राम ने रावण को मारा तो विजय दिवस के रूप में दशहरा त्यौहार मनाया जाता है और राम दीपावली पर घर अयोध्या पर पहुँचे थे इसलिए दीपावली मनाई जाती है। लेकिन राम तो रावण को मारकर अगले दिल ही पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या पहुँच गए थे। तो अब दशहरा और दीपावली के बीच 20 दिन का अंतर कैसे आ गया? वस्तुतः मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी जिस दिन उनका राज्याभिषेक होना था 14 वर्ष का वनवास काटकर पष्ठी दिन अयोध्या लौटे थे तो दीपावली कार्तिक अमावस्या को क्यों मनाई जाती है आदि-आदि

अनेक ऐसे प्रश्न हैं जिस को उठाना विषय से अलग होने वाली बात होगी इसलिए उन पर न जाते हुए हमें अपने आदर्श महापुरुषों का आदर तो करना ही चाहिए लेकिन जब हम किसी से मिलते हैं तो उसका आदर करने के लिए राम और कृष्ण जिस संस्कृति का अनुमोदन करते थे उसी का अनुकरण कर नमस्ते ही करना चाहिए और रही बात पढ़े लिखे लोगों द्वारा अंग्रेजी संस्कृति से प्रभावित होकर गुड-मॉर्निंग व गुड-इवनिंग आदि के प्रयोग की तो जरा विचार करो कि गुड-मॉर्निंग करने वाले व्यक्ति ने यदि विदेश में (अमेरिका) रहने वाले अपने रिश्तेदार को प्रात: उठकर गुड-मॉर्निंग कहा तो क्या विदेशी रिश्तेदार या मित्र उनका मजाक नहीं बनाएगा? क्योंकि जब यहाँ प्रात: होती है तो अमेरिका में सायं काल होता है और यदि प्रात: उठकर गुड-इवनिंग कहा तो साथ में बैठे परिवार के लोग मजाक उड़ाएंगे कि सुबह-सुबह गुड-मॉर्निंग की बजाए गुड-इवनिंग कह रहे हैं। पहली बात तो यह है कि गुड-मॉर्निंग का शाब्दिक अर्थ 'अच्छी सुबह', गुड-आफ्टरनून का 'अच्छी दोपहर' और गुड-इवनिंग का 'अच्छी शाम' ऐसा है, लेकिन ये तो दिन की वेलाओं की प्रशंसा है जबकि दिन तो ईश्वर द्वारा बनाया गया है जो सभी के लिए एक समान अच्छा है। इसमें मेरा अभिवादन तो है ही नहीं, दूसरी बात जिस संस्कृति का अनुकरण करने पर हमारा मजाक बन जाए उसका अनुसरण क्यों करें? इस प्रकार परस्पर अभिवादन के लिए जय सिया राम, राम राम, जय श्री कृष्णा, राधे कृष्णा आदि कहने पर भी राम-कृष्ण आदि की जय तो होती है पर सामने वाले व्यक्ति का अभिवादन नहीं। आज कल हमारे सिख भाई भी परस्पर 'सत् श्री अकाल' का प्रयोग कर अभिवादन करते हैं। जब गुरु ग्रन्थ साहिब के अनुसार 'नमस्ते अजाते-नमस्ते अपाते' आदि का प्रयोग है जो नमस्ते कहने का ही विधान है। यहाँ यह बात विचारणीय है कि दसों गुरु किस अभिवादन वाक्य का प्रयोग करते थे? सच्चाई जो कि आज भी जनसाखियों से सिद्ध होती है यही है कि परस्पर मिलते समय सभी नमस्ते ही करते थे। स्वयं को आर्य-हिन्दुस्तानी ही समझते थे, धोती पहनते थे और यज्ञोपवीत (जनेऊ) भी धारण करते थे। अत्यत दुख व आश्चर्य की बात है कि यह सबकुछ उनके धर्म-ग्रन्थों में विद्यमान होते हुए भी वे अलगाववादी प्रकृति होने के कारण जानते हुए भी मानने से इन्कार करते हैं। 'सत् श्री अकाल' तो उनके द्वारा प्रयोग किया जाने वाला युद्धकालीन जयघोष है। जैसे मुसलमानों के द्वारा अभिवादन के लिए आदाब अर्ज या सलाम वालेकुम प्रयोग होता है लेकिन उनका युद्धकालीन जयघोष अल्लाह-उ-अकबर है। ठीक ऐसे ही युद्धकाल में हमारे महापुरुषों को आदर्श रखा जाता था और जय श्री राम व जय श्री कृष्ण, जय दुर्गा, जय माँ काली तथा हर-हर महादेव आदि-आदि जयघोषों का प्रयोग किया जाता था लेकिन मैंने पहले भी स्पष्ट किया है कि परस्पर अभिवादन के लिए हमें वैदिक संस्कृति के अनुसार नमस्ते का ही प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि नमस्ते का प्रयोग करने पर परस्पर समर्पण का भाव स्पष्ट होता है एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव दिखता है। जब दोनों ओर से इस प्रकार की नम्रता की अभिव्यक्ति हो तो प्रेम बढ़ेगा ही और परस्पर ज्ञान का आदान-प्रदान प्रारंभ होने का सिलसिला जारी हो जाएगा।

सन् 1953 ई० में जब भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू डलेश वार्ता के अवसर पर अमेरिका में फोटोग्राफरों से निरन्तर हाथ मिलाने के कारण थक गए तो कहा कि हमें भारतीय ढंग से अभिवादन करना चाहिए। इसके अलावा भारतीय राजदूतों द्वारा विदेशों में विभिन्न समारोहों के अवसरों पर सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग होते हुए पाया जाता

है। भारत के प्रधानमंत्री जब रूस की यात्रा पर गए थे तो उनके स्वागतार्थ मार्ग में पट्टियों पर नमस्ते और स्वागतम् ही लिखा था, जब रूस के प्रधानमंत्री खुश्चेव और प्रधान बुलगानिन भारत में आये थे तो उन्होंने सर्वत्र हाथ जोड़कर ही अभिवादन किया। जब अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तब विचार हुआ कि किसी एक अभिवादन को सर्व-मान्यता देकर फिर उसका प्रयोग किया जाए इसके निर्णय के लिए वहाँ पर उस समय अनेकों मतावलम्बियों ने अपने-अपने अभिवादनों की व्याख्या, प्रशंसा व विशेषताएँ स्पष्ट की। उसी समय वहाँ पर भारत के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् पण्डित अयोध्या प्रसाद जी वैदिक रिसर्चस्कॉलर कोलकाता ने 'नमस्ते' शब्द की विशेषताओं पर प्रकाश डाला और व्याख्या की जिसका परिणाम यह निकला कि यह नमस्ते शब्द वहाँ पर सभी को इतना प्रिय लगा कि सर्व सम्मति से अभिवादन के रूप में केवल नमस्ते को ही सबके द्वारा अपनाया गया। अत: हमें सभी बे सिर पैर के अवैदिक अभिवादनों को त्याग कर भारतीय (आर्यावर्तीय) पुरातन अभिवादन नमस्ते का ही प्रयोग करना चाहिए। सभी प्राचीन ग्रन्थों में नमस्ते करने का प्रमाण:- बड़ो व छोटों को भी नमस्ते ही करने का विधान है।

वास्तव में 'नमस्ते' ही सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक अभिवादन है। उपर्युक्त विस्तृत चर्चा के पश्चात् सभी सज्जनों से अनुरोध है कि समस्त विश्व के मानवों को एकसूत्र में पिरोने व कल्याण, मैत्री एवं एकता के लिए तथा परस्पर अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग करें।

गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61,
मो. 9871644195

अन्धविश्वास की कथा— मानव समाज की व्यथा

गतांक से आगे.....

पहले महाराष्ट्र में गणेश उत्सव होता था तथा दक्षिण प्रान्तों में जगन्नाथ यात्रा निकाली जाती थी। अब अनेक प्रान्तों में यह प्रचलन बढ़ रहा है क्योंकि मन्दिर वालों की इससे आय और शान बढ़ती है। वे भक्तों को प्रेरित करते हैं। मनोरथ सिद्धि और पुण्य की बात बताते हैं। लोगों में होड़ लग जाती है। कई पैसे वाले बूड़ी मूर्तियां बनवाते हैं। गरीब भी बेचारे सोचते हैं कुछ तो हम भी करें वे भी छोटी-मोटी मूर्ति बनवाते हैं। महंगे पदार्थों से पूजा होती रहती है। फिर उन्हें विसर्जित अर्थात् पानी में डुबो दिया जाता है। देखो! कैसी अजीब परम्परा पड़ गई है। बनाओ, पूजो, डुबो दो। उसे भगवान् बताते हैं। भगवान् को डुबाना कैसे उचित है? किसी को भी डुबाना अनुचित है। लाखों रुपये के फूल व पदार्थ पूजा के नाम पर नष्ट कर दिये जाते हैं। मन्दिरों में दूध, पानी, फूल बिखरे पड़े रहते हैं। धार्मिक स्थलों पर पूजा अवशेषों के ढेर सड़ते हैं। एक फूल-पौधे पर महीने भर तक सुगन्ध फैलाकर वायु शोधन करता है लेकिन माला व मूर्तियों पर प्रयुक्त फूल कूड़े और पानी में गिर कर सड़ता है। वायु प्रदूषित होती है। यह पूजा पद्धति तो पापरूप कर्म बन गई है।

कई लोग कहते हैं कि मूर्ति के बिना ध्यान नहीं लगता, क्योंकि भगवान् तो दिखता नहीं उसका ध्यान कैसे लगाएँ? मूर्ति दिखाई देती है तो उसमें ध्यान आसानी से लग जाता है लेकिन ऐसी बात नहीं है। कितने ही सम्प्रदाय हैं, जो मूर्ति नहीं पूजते वे उस अदृश्य शक्ति के नाम का जप करते

हैं। उसी के जप से उनका ध्यान जम जाता है, विवेक जागरित हो जाता है, भगवान् की शक्ति का अनुभव हो जाता है। कुछ लोग कहते हैं भगवान् के दर्शन होते हैं, जिसका कोई रूप ही नहीं उसके दर्शन कैसे होंगे? लोग जिस मूर्ति की पूजा करते हैं वह उन्हें मन में दिखाई दे जाती है। यह तो स्वाभाविक है जीवन में नित्यप्रति देखी जाने वाली वस्तुएँ प्रत्येक व्यक्ति को मन या स्मृति में दिखती रहती हैं। ईसाई लोगों को ईसा दिखाई दे जाता है। मुसलमानों को कल्पित खुदा, हिन्दुओं को भी जिसकी वे पूजा करते हैं वह दिखाई देता है। ऐसे तो सबका भगवान् अलग-अलग हुआ जबकि वह तो एक ही है। हमारे सोच में ही अलगाव है इसलिए हम जैसा सोचते हैं वैसा ही हमें दिखाई देता है। यह तो हमारी सोच का खेल है और कुछ नहीं।

निष्पक्ष विद्वान् व धर्मगुरु असत्य पूजा पद्धतियों में सुधार करें

विद्वानों, धर्मगुरुओं का यह परम कर्त्तव्य है कि वे सभी सम्प्रदायों की बैठक करके निराकार रूप में प्रभु भक्ति करने की सरल पद्धति बनाएं। योगदर्शन में वर्णित अष्टांग योग ही वास्तविक व सरल पद्धति है। अन्य पद्धतियों की अवास्तविक परम्पराएं समयानुसार जैसे भी चलीं अब उनमें सुधार की आवश्यकता है। पहले सतीप्रथा का वेदों में उल्लेख बताया जाता था। ब्राह्मण को छोड़कर अन्य को शिक्षा का अधिकार नहीं था। स्त्री व शूद्र भी शिक्षा से वंचित थे। विदेश में जाना वर्जित था। अन्य सम्प्रदाय से हिन्दू सम्प्रदाय में आना अधर्म माना जाता था। छूने मात्र से व्यक्ति पतित व विधर्मी मान लिया जाता था। आज ये सभी परम्पराएं मान्य नहीं रही। पिछले वर्ष से ही नदियों में मूर्तियां या पूजा सामग्री प्रवाहित करना वर्जित किया गया है परन्तु अन्धविश्वासी लोग स्वीकार नहीं करना चाहते। समय व सुविधानुसार परिवर्तन अवश्यम्भावी है। पहले के पहनावों में प्रत्येक देश व मत-सम्प्रदाय में बदलाव आया है। माताएं पहले घाघरे पहनती व सिर पर जूड़ा (चूडा) रखती थी अब नहीं रखती। पर्दाप्रथा भी घटी है। लेकिन आज भी कुछ व्यक्ति पहनावे, केस, दाढ़ी, मूंछ, भोजन, भजन, भाषा पूजा पद्धति को धर्म/मत से जोड़कर देखते हैं। ये सभी क्षेत्र के अनुसार विकसित परम्पराएं हैं। ये बदलती रहती हैं, लेकिन धर्म कभी नहीं बदलता। बात यह है कि लोग सच्चे धर्म को नहीं समझते। परम्पराएं या पूजा पद्धति धर्म नहीं है। धर्म क्या है? मनुष्य कोई भी कार्य करने से पहले उसके बारे में भी सोचता है कि यह ठीक है या गलत? लेकिन धर्म तो सबसे जरूरी चीज है उसके बारे में भी सोचना चाहिए कि जिसे मैं धर्म मानता हूं वह कितना ठीक है या गलत है? बिना सोचे विचारे और बिना तर्क के विश्वास करना उचित नहीं।

शास्त्रों में लिखित का सार है कि- धैर्य रखना, क्षमाशील रहना, बुरे विचारों को समाप्त करना, चोरी न करना, सफाई रखना, शारीरिक शक्तियों का दुरुपयोग न करना, बुद्धि से विचार कर कार्य करना, निरन्तर ज्ञान प्राप्त करना, सत्य बोलना, क्रोध न करना, मन-वचन-कर्म से किसी का बुरा न करना, किसी प्रकार का छल-कपट न करना, स्वास्थ्यप्रद वस्तुओं का संतुलित रूप से सेवन करना, शाकाहारी रहना (क्योंकि मांसाहार से जीव हत्या होती है जिससे पर्यावरण भी बिगड़ता है), ईर्ष्या-द्वेष और जलन रखना, मान में अहंकार न करें, अपमान को सहन करें। परोपकार, परस्पर सहयोग सहानुभूति रखें, निन्दा न करना, करुणाभाव रखना, जैसा व्यवहार हम दूसरे से

अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार हम दूसरों से करें। प्रभु जप द्वारा मन का एकाग्र करना, जिससे मन शान्त होकर विवेक जागरित होता है तथा मन की शान्ति से रक्तचाप उचित रहकर व्यक्ति का स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है। येही हैं धर्म के लक्षण, इससे विपरीत बातें धर्म नहीं हो सकती। पूजा-पाठ धर्म नहीं है, ये परम्पराएं हैं, जो अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से रूढ़ हो गई हैं। विद्वान् मानव एकता के लिए प्रयत्न कर निर्णय लेंगे तभी एकता हो सकती है। हमारा उद्देश्य इतना ही है कि वास्तविक धर्म को पहचान कर ही धार्मिक एकता हो सकती है, जिससे मानव की सभी समस्याओं का हल निकल सकता है। इसके लिए बिना किसी भेदभाव के सबके लिए रुचि अनुसार,समान, सर्वांगपूर्ण, आवासीय शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता होगी, जिसमें शाश्वत मानव धर्म की शिक्षा तथा उसके अनुरूप जीवनचर्या रखते हुए शिक्षा का अभ्यास कराया जाए। संस्था से ही रोजगार देकर प्रतिवर्ष माता-पिता, शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओं की सहमति से, बिना जाति-पाति का भेदभाव किए, परस्पर विरुद्ध गोत्र वालों का सामूहिक विवाह पद्धति प्रतिवर्ष विवाह करके युवाओं को घर भेजा जाए। इससे जाति-पाति तथा दान-दहेज स्वत: ही समाप्त हो जायेंगे। भ्रूणहत्या की कोई सोचेगा ही नहीं। युवा समझदार होकर एक निश्चित जीवनचर्या के अभ्यासी होकर समाज में आयेंगे, जिससे समाज से अनेक समस्याएं स्वत: ही जड़-मूल से नष्ट हो जायेंगी। सामाजिक जन इस व्यवस्था के लिए प्रयास करें।

महावीर 'धीर' 9466565162
21/227, प्रेमनगर रोहतक (हरियाणा)
E-mail : mahavirdheer@gmail.com

पाणिनीय व्याकरणे यज्ञीयमीमांसा: ग्रन्थ की समीक्षा

डॉ० प्रियम्वदा वेदभारती ने कन्या गुरुकुल नजीबाबाद से 'पाणिनीयव्याकरणे यज्ञीय मीमांसा' नामक ग्रन्थ सम्पादक सुधारक के पास भेजा है। इस ग्रन्थ में विदुषी लेखिका ने व्याकरण, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, ब्राह्मणग्रन्थ, प्रातिशाख्य, शुल्बसूत्र, आरण्यकग्रन्थ, उपनिषद्, दर्शन, स्मृतिग्रन्थ, पुराण, वेद के सायणभाष्य आदि 110 ग्रन्थों के प्रमाण सहित अपने विषय को स्पष्ट करने का विशेष यत्न और पुरुषार्थ किया है। एतदर्थ तो लेखिका बधाई की पात्र है।

इसके साथ ही इस ग्रन्थ में पाणिनीय व्याकरण के अतिरिक्त अन्यग्रन्थों से भी अनेक ऐसी मान्यताएं भी दिखाई हैं जो अवैदिक होने के साथ-साथ जगड्वाल से भरी हुई हैं। इन मान्यताओं का पाणिनि के व्याकरण से कोई संबंध भी नहीं है। यदि इनका प्रमाण देना था तो इनको अवैदिक तथा वर्तमान में अनुपयुक्त मानकर इनका प्रतिकार भी करना चाहिये था। जिससे अध्येता को संशय में न रहना पड़े। परन्तु 646 पृष्ठ के पूरे ग्रन्थ में इन मान्यताओं का खण्डन कहीं भी नहीं किया गया, जो करना अत्यावश्यक था। उदाहरण हेतु अवैदिक और व्यर्थ के आडम्बर वाली अनुपयुक्त बातों का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया जा रहा है।

1. यज्ञकुण्ड में प्रयोग की जाने वाली 8 प्रकार की मिट्टी आदि, सिकता=बालू रेत, ऊसर खेत की मिट्टी, चूहों द्वारा खोदी मिट्टी, दीमक की बांबी की मिट्टी, न सूखने वाले तालाब की मिट्टी,

सूअर के मुख द्वारा खोदी गई मिट्टी, छोटे-छोटे कंकड और सोना। इससे पूर्व शमी=जांटी वृक्ष के ऊपर उगे हुए पीपल की शाखा काटकर उसके दो भाग करके उत्तरारणि और अधरारणि बनायें। सात प्रकार के वृक्षों की लकड़ी लायें। पीपल, गूलर, पलाश, शमी=जांटी, विकंकत, जिस पेड़ पर बिजली गिरी हो उसकी लकड़ी तथा पद्मपत्र=कमल के पत्ते। (पृष्ठ 378-379)

समीक्षा– इतना जगड्वाल एकत्र करना ही कठिन है, यदि कर लिया तो ऐसे यज्ञकुण्ड में किया गया यज्ञ व्यकित को कितना लाभ पहुंचायेगा? इस जगड्वाल को दूर करके महर्षि दयानन्द जी ने सर्वसुलभ यज्ञ व्यवस्था लिख दी है।

2. ग्राम प्राप्ति की कामना वाला व्यक्ति यवागू=दलिया से यज्ञ करे। बल की कामना वाला तण्डुल=सूखे चावलों से, इन्द्रियों की शुद्धि करने की इच्छावाला दही से तथा तेज प्राप्ति की कामना वाला व्यक्ति घी से यज्ञ करे। (पृष्ठ 379)

समीक्षा– उक्त पदार्थों से उक्त प्राप्तियां हो जायेंगी यह केवल आडम्बर तथा अतिशयोक्ति ही है। कोई व्यक्ति यवागू से यज्ञ करके देखले, उसे ग्राम मिलना तो दूर रहा, ग्राम की गली भी नहीं मिलेगी।

3. (भाव लिख रहा हूं) जिस गाय के दूध से हवन करना हो, उस गाय को यज्ञ विहार के दक्षिण में बांधे, सूर्यास्त के पश्चात् उसका दूध निकाले, दूध को पकाने के लिए मिट्टी के पात्र में डाले, तीनों अग्नियों को जल से परिषेचन कर, गार्हपत्य कुण्ड से आहवनीय कुण्ड तक वेदी में लगातार जलधारा गिरावे, गार्हपत्य कुण्ड से कुछ अंगारे निकालकर उन्हें वायव्य=उत्तर पश्चिम कोण से रखकर उनके ऊपर दूध के पात्र को रखकर दूध को पकावे।.....थोड़ी-सी कुशाओं=डाभ को जलाकर दूध के पात्र के चारों ओर तीन बार घुमायें। इसके बाद अंगारों पर से उतारी हुई मटकी को पूर्व दिशा में रखकर खींचकर दूर ले जायें। इससे वह रास्ता काले रंग को जायेगा।.....मटकी के दूध को चम्मच से चार बार लें।.....इस प्रकार के दूध से हवन करे। (पृष्ठ 381)

समीक्षा– इससे पाठक समझ लेंगे कि यह प्रक्रिया यज्ञकर्त्ता को कितना पुण्य देगी या व्यर्थ का आडम्बर करायेगी।

4. दर्शपूर्णमास याग में अनुष्ठीयमान कर्म– अग्नि उद्धरण, अग्नि का अन्वाधान, ब्रह्मा का वरण, प्रणीता प्रणयन, परिस्तरण, पात्रासादन, शूर्प तथा अग्निहोत्रहवणी का प्रतपन, गाड़ी अथवा इडापात्र से हविग्रहण, पवित्रकरण, पात्र से हवि:प्रोक्षण, हवि के चावलों का कुण्डन, फलीकरण, पेषण=पीसना, कपालोपधान, उपसर्जन नामक पानी में हवि का अधिश्रयण, वेदिनिर्माण-सज्जा, स्तम्बयजु-र्हरणादि, स्रुवाजुहूपभृद्ध्रुवा आदि का सञ्मार्जन, पत्नी सन्नहन, इध्मवेदि और बर्हियों का प्रोक्षण, प्रस्तरग्रहण, वेदि का स्तरण, परिधिपरिधान, इध्मों का आधान, विधृति नामक कुशा का स्थापन, जुहू आदि का वेदि में स्थापन, पन्द्रह सामिधेनी ऋचाओं का उच्चारण, आहवनीय अग्नि के वायव्य कोण से आरम्भ करके आग्नेय कोण तक अग्नि के ऊपर लगातार घृत धारा का स्रावण, निर्ऋति कोण से आरम्भ करके ईशान

कोण तक ऊपर की भांति घृतधारा स्रावण करना, पांच प्रयाज, दो आज्यभाग, प्रधानयाग, स्विष्टकृत्.....यजमानव्रतविसर्ग और ब्राह्मणतर्पण। (पृष्ठ 383-384)।

समीक्षा– इस प्रकार के अव्यवहार्य कर्मकाण्ड से ऋषिदयानन्द जी ने पीछा छुड़ाकर जनता का बहुत उपकार किया। ऊपर लिखी सभी विधि करके प्राप्ति क्या होगी, यह भी स्पष्ट करना चाहिये था।

5. निरूढपशुयाग–.....यहां पर द्रव्य छाग=बकरा है। वह भी प्रत्यक्ष नहीं, किन्तु बपा=चर्बी?, हृदय, जिह्वा, वृक्ष=छाती आदि अंगों के द्वारा ही। (पृष्ठ 386)

समीक्षा– यहां तो प्रत्यक्ष ही यज्ञ में बकरे के अंगों की आहुति है। इसे वर्ष में एक बार, दो बार या छः बार करना लिखा है।

6. यज्ञिय यूप बनाने हेतु बहुत पत्तों वाले पलाश, खदिर, बिल्व या रोहितक (रोहिड़ा) आदि किसी एक वृक्ष को बढ़ई से कटवा कर अथवा स्वयं काटकर छेदन स्थान पर आहुति देकर यजमान ऊपर हाथ करे उतना लम्बा भाग काटकर रखले।.....वेदि के पास सभी पाशुक पात्र-....., रशना=रस्सी, छुरिका, कुम्भी आदि 15 पात्रों का प्रोक्षणादि करके यूप के लिए गढा खोदकर यूप को स्थापित करे। पुनः कुशाओं से बनी रस्सी से लपेट कर याग=हवन करने योग्य, काणा आदि दोषों से रहित, जिसके दांत निकल आये हों ऐसे बकरे को स्नान कराके यूप के समीप लाके ऋत्विजों से भिन्न किसी अन्य के द्वारा इस पशु का संज्ञपन कराया जाता है अर्थात् काटा जाता है। तदनन्तर बकरे की सफेद पतली झिल्ली उखाड़कर उस वपा को आहवनीय अग्नि में पकाकर आहुति देकर उसके बाद उसके हृदय आदि अंगों को लेकर शामित्र नामक अग्नि में सम्बन्धित देवता वाला पुरोडाश तैयार करके उसी देवता हेतु याग किया जाता है।

समीक्षा– यहां यूप बनाने की जटिल प्रक्रिया और बकरे की हत्या से किस स्वर्ग की कामना की गई है, इसे विदुषी लेखिका ने स्पष्ट नहीं किया। यज्ञ में पशुबलि का इससे अधिक स्पष्ट प्रकरण और कहां मिलेगा। यह प्रक्रिया नितान्त आसुरी और अवैदिक है। **आलभन** का अर्थ है- स्पर्श करना। जैसे-**अधिहृदयामालभते**-हृदय का स्पर्श करता है। **कुमारं जातं पुनरन्यैरालम्भात् सर्पिमधुनी हिरण्ययेन प्राशयेत्।**

7. जो व्यक्ति तैत्तिरीयारण्यक में पठित कूष्माण्ड संज्ञक मन्त्रों से पवित्र इष्टियां, जप, पुण्यतीर्थ स्नान तथा पवित्र कर्मों द्वारा आत्मा का शोधन करके निर्वैर हो जाता है, वही सोमयाग कर सकता है। जिसके पिता और दादा ने सोमयाग नहीं किया हो वह सोमयाग का अधिकारी नहीं होता।

समीक्षा– सोमयाग यज्ञ का ही एक रूप है। यज्ञ पवित्र कर्म है, इसे प्रत्येक व्यक्ति को करने का अधिकार होना चाहिये। प्रतिबन्ध लगाना अनुचित है।

8. सोमयाग में प्रथमदिन के कर्त्तव्य– यजमान और उसकी पत्नी स्नानादि करके यज्ञमण्डप में आयें। अन्न सेवन करके दोनों जने अपने शरीर को मक्खन से लेपन करें, आंखों में काजल

लगायें। अध्वर्यु छः दीक्षा आहुति देवे। यजमान और उसकी पत्नी को काले हिरण की 2 खालें, एक मेखला दे। यजमान को गूलर पेड़ का एक दण्ड और खुजलाने के लिए काले हिरण का सींग देवे। दूसरे दिन सोम खरीदरना होता है। इसके लिए दस द्रव्यों में से कोई एक ले लें। जैसे– एक वर्ष की बछिया, सोना, बकरी, गाय, बछड़े सहित गाय, सांड, गाड़ी में जुतने वाला बैल, बड़ा बछड़ा, बड़ी बछड़ी। इनके बदले में सोम खरीदकर गाड़ी में रखकर यज्ञशाला में लाते हैं। तीसरे दिन यज्ञवेदी बनाते है, वह महावेदी प्राचीन वंशमण्डप के सामने से छः कदम छोड़कर पूर्व पश्चिम 72 पद चौड़ी, दक्षिणोत्तर में 60 पद चौड़ी और अंसभाग में 48 पद वाली होवे। तदनन्तर वपा पर्यन्त पशुयाग करके पांचवें दिन समाप्त करना चाहिये।

समीक्षा– पाठक इसे पढकर स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि इस कर्म में बुद्धिगम्य या स्थायी महत्त्व की कोई बात है या नहीं। ऐसे स्थलों पर लेखिका को स्वमन्तव्य अवश्य देना चाहिये था।

9. अवभृथ स्नान– इसमें सोम से लिप्त सभी पात्र, ..., दीक्षाकाल में धारण किये योक्त्र, मेखला, वस्त्र जाल, काले हिरण की चर्म नदी या तालाब में फैंककर यजमान दम्पती एक दूसरे की पीठ मलकर स्नान करते हैं, इत्यादि।

समीक्षा– यह क्रिया जल को विकृत करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

10 अश्वमेध– इस यज्ञ के अंगभूत बहुत से ग्रामीण और वन्य पशु हैं। उनमें अश्व की प्रधानता है। वह अश्व भी साधारण नहीं अपितु उसके आगे का भाग काला हो, पीछे का आधा भाग सफेद हो, माथा शकटाकार तिलक से युक्त हो और गम्भीर आकृति हो। इस अश्व के माता-पिता ने भी अनेक बार सोमपान किया हो, उनसे उत्पन्न अश्व शिशु को उत्पन्न होते ही जलान्तर पान करने से पूर्व सोमरस पिलाया गया हो, ऐसा अवश्व ही अश्वमेध हेतु उपयुक्त होता है।

समीक्षा– ऐसे अश्व के लिए संसार भर में चक्र लगाते रहो। फिर भी मिले या न भी मिले, कोई निश्चित नहीं है। क्या इससे भिन्न अश्व से काम नहीं चलाया जा सकता था। खाली बैठे लोगों को इसी प्रकार के जगड्वाल रचने आते थे, जिससे लोग पुण्यप्राप्ति की कामना से धन और समय नष्ट करते रहते थे।

11. गुदहोमा उपयाजाः (भावप्रदर्शित है).....पशुबन्धयागों में छागादि पशुओं को यजमान सहित छह ऋत्विक् काटते हैं। मृत पशु के काटने आदि कर्म वस्तुतः शामित्र कर्म हैं। पशु के गुदभाग के 11 खण्ड=टुकड़े करके प्रतिस्थाता– **समुद्रं गच्छ स्वाहा** आदि 11 मन्त्रों को पढकर वषट्कार करते ही उनका हवन करता है। (पृष्ठ 419)

समीक्षा– यहां यज्ञ जैसे पवित्र कर्म के साथ अश्लीलता को जोड़कर कौन से स्वर्ग की कामना की है?

12. देवत्व प्राप्ति की इच्छा वाले पुरुषों ने पुराकाल में गर्गत्रिरात्र नामक याग का अनुष्ठान किया। इस याग से वे तीन रातों में ही उत्तम भोग्य समृद्धि को पाकर देह त्याग के अनन्तर स्वर्ग

लोक को पहुंच गये। (पृष्ठ 426)

समीक्षा– यदि स्वर्गलोक में जाने का यही सस्ता मार्ग है तो यम-नियम-योगाभ्यास आदि धार्मिक कर्मों की क्या आवश्यकता रह जाती है?

13. जो संग्राम जीतना चाहता है, मनुष्यों की आयु की हानि या जनविप्लव को शान्त करना चाहता है उसे अग्नि देवता वाले अष्टाकपाल पुरोडाश से या अग्निसोमदेवता वाले एकादश कपाल से या द्यावापृथिवी देवता वाले द्विकपाल पुरोडाश से यज्ञ करना चाहिये (पृष्ठ 438)

समीक्षा– यदि यही सफलता का उपाय है तो सेना की क्या आवश्यकता है, इसी यज्ञ से आतंकवाद और पाकिस्तान जैसे आतंकवादियों को पराजित किया जा सकता है।

14. तैत्तिरीय संहिता के अनुसार स्पर्धा में, युद्ध में या किसी सभा में जाने वाला हो अथवा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी हो तो ऐन्द्राग्न एकादश कपाल से आहुतियां देनी चाहियें (पृष्ठ 439)

समीक्षा– 13 संख्या वाली समीक्षा यहां भी लागू हो सकती है।

15. जो यजमान वृष्टि की कामना करता है वह अग्निमरुद् देवता वाली चितकबरी बन्ध्या गाय का आलभन करे [यहां आलभन का अर्थ मारना ही प्रतीत होता है] (पृ० 440)

समीक्षा– यदि वर्षा करने का उपाय गोवध है तो वृष्टियज्ञ में करीरकाष्ठ तथा विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये।

16. वाजपेययज्ञ में दक्षिणा– इस यज्ञ में 17 पदार्थ दक्षिणा में दिये जाते हैं। जैसे- रथ, सोना, घोड़ा, हाथी, ऊंट, गाय, बैलयुक्त गाड़ी, जौ, शय्या, वाहन, बहुमूल्य वस्त्र, साधारण वस्त्र, दास, दासी, भेड़, बकरी, दुन्दुभि। (पृष्ठ 443)

राजसूय यज्ञ की दक्षिणा– भारवहन में असमर्थ बैल, सांड, पहली ब्याँत का बछड़ा, तीन घोड़ों से युक्त रथ, वामन गौ, श्याम गौ, धूसर रंग की गाय, एक लाख गायें, सोने के दो दर्पण, स्वर्णमयी माला, गोल स्वर्णाभूषण, वन्ध्या गाय, बैल, शुद्ध वस्त्र, जौ से भरी हुई बड़ी गाड़ी, गाड़ी ढोने में समर्थ बैल। (पृष्ठ 444)

समीक्षा– पौराणिक पद्धति से यज्ञ कराने वाले पण्डितों को इसी प्रकार के प्रमाणों से दक्षिणा लेने का चस्का पड़ गया है। भला एक लाख गायें रखने के लिए उसके पास स्थान उपलब्ध होता होगा। ऐसे अनेक पण्डित होंगे, जिन्हें एक-एक लाख गायें मिलती होंगी।

17. स्वर्गारोहण की विधि– वाजपेय याग में यजमान अपनी पत्नी को **'जाय एहि'** इस वाक्य से बुलाता है। इस याग में 17 घोड़ों को दौड़ाकर, 17 मधुघटों और 17 सौर ग्रहों के प्रचार के बाद यज्ञ के यूप के साथ लगाई गई काठ की 21 पैड़ियों वाली सीढी से चढता हुआ पत्नी को बुलाता है और कहता है- **''जाय एहि स्वो रोहाव''** और दोनों सीढी के द्वारा ऊपर चढते हैं। उस समय नीचे खड़े हुए यजमान के पुत्र-पौत्र, 17 पीपल के पत्ते, क्षार-मिट्टी आदि से यजमान को बींधते हैं। यह क्रिया स्वर्गारोहण कही जाती है। (पृष्ठ 481)

समीक्षा– इसी क्रिया से यदि स्वर्ग मिलता है तो वेद शास्त्रोक्त धर्माचरण और योगाभ्यास

आदि की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिये।

18. यज्ञों में पशुमारणरूप दारुण कर्म करने वाले को शमिता कहते हैं। शमिता दो प्रकार के होते हैं, जो शमिता पशु का मुख-नाक आदि बन्द करके मारता है उसे संज्ञपयिता कहते हैं और जो शमिता पशु के अंगों को काट कर अलग-अलग करता है वह विशसिता कहाता है। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार मृत पशु के मांस खण्ड प्रसाद रूप में ब्राह्मण को देवें। (पृष्ठ 540)

समीक्षा– इस प्रकार की हिंसा वाली क्रिया को देखकर ही महात्मा बुद्ध ने इनको मानने से निषेध कर दिया था। **संज्ञपन** का वास्तविक अर्थ है– ज्ञान देना, मेल कराना, बतलाना आदि।

19. ऐतरेय ब्राह्मण की सातवीं पंजिका के 31 वें अध्याय में विस्तार से लिखा है कि पशु का कौन-सा भाग किसे प्रसाद रूप में देना चाहिये।.....कात्यायन के मत में 349 पशुओं की वपा से होम करना लिखा है। इनमें गर्भिणी भैड़, मेंढा, गौ और बकरा विशेष रूप से ग्रहण किये जाते हैं। इनमें भी सफेद और काले पशुओं का भी अलग से विधान है। वन्ध्या गाय और गाड़ी ढोने में समर्थ बैल की प्रधानता है। (भाव, पृष्ठ 542)

समीक्षा– यज्ञ के नाम पर हिंसा करने का यह गर्हित कर्म ही यज्ञों के प्रति अनास्था कराता है।

20. यज्ञवेदि के पास– भूमि खोदकर मानव आकृति वाली सोने की प्रतिमा स्थापित करना, उसके चारों ओर गाय, घोड़ा, बकरा, भेड़ की आकृति वाली मिट्टी की मूर्तियों को मिट्टी से ढंकते हैं। इसके बाद ईंटों से पंख फैलाये हुए गरुड़ की, उड़ते हुए बगुले की, द्रोण, रथचक्र, त्रिकोण=प्रउग, डमरु की आकृत्ति सदृश स्थण्डिल बनाते हैं। (पृ० 569-570 का भाव)

समीक्षा– यह भी अव्यवहार्य है। सीधा-सा यज्ञकुण्ड बनाकर यज्ञ करने में जितना लाभ होगा, वैसा लाभ इस प्रकार की चितियों से न होकर व्यर्थ के ढकोसले और पाखण्ड को बढावा मिलता है।

यज्ञ करते समय यदि यजमान मर जाये तो यजमान के मर जाने पर– मृत यजमान के मुख, नासिका, कान, आंखों में सोने के सात टुकड़े रखकर, दायें हाथ में घी से भरा जुहू पात्र और स्फ्य, बायें हाथ में उपभृत् पात्र, छाती में ध्रुवापात्र, मुख में अग्निहोत्रहवणी, दोनों नासिकाछिद्रों में दो स्रुवा, कानों में प्राशित्रहरण, शिर पर प्रणीता तथा चमस, बगलों में दो सूप=छाज, पेट में इडापात्री, जंघाओं के बीच में ऊखलमुसल रखने का विधान कात्यान श्रौतसूत्र में किया है। यदि ये पात्र मिट्टी या पत्थर के हों तो जल में डाल दें, यदि ताम्बे, लोहे, पीतल के हों तो ब्राह्मण को दे दें।

समीक्षा– महर्षि दयानन्द जी ने संस्कारविधि लिखकर इन सारे झंझटों से मुक्ति दिला दी। हमने यहां सामान्य तौर से कुछ स्थलों को ही दिखाया है। ऐसे स्थल शतधिक संख्या में हैं, जिन्हें पाठक ग्रन्थ में पढ़कर देख सकते हैं।

इस प्रकार 'पाणिनीय व्याकरणे यज्ञीयमीमांसा' ग्रन्थ का अधिकतर भाग इन श्रौत सूत्र, गृह्यसूत्र, ब्राह्मण गन्थों में वर्णित अव्यवहार्य और अनुपयुक्त क्रियाकलापों से भरा हुआ है।

इनके पर्याप्त भाग का तो पाणिनीय व्याकरण से अप्रत्यक्ष सम्बन्ध भी नहीं है। पुनरपि विदुषी लेखिका ने किस भावना से इस जगड्वाल को ग्रहण कर लिया, यह तो वे ही जानती हैं। यदि लिया भी है तो तत्-तत् स्थल पर उसकी मीमांसा और समाधान भी कर देना चाहिये था कि वे मान्यतायें अवैदिक और गर्हित भी है अत: इनका समर्थन नहीं किया जा रहा।

महाभारत युद्ध के उपरान्त यज्ञों के विकृतरूप ने पाखण्ड का रूप भी धारण कर लिया था, अत: वैदिक ग्रन्थों में उन बातों का प्रक्षेप कर दिया गया। जिसे महर्षि दयानन्दजी ने घोर पुरुषार्थ करके दूर करने के लिए आर्षदृष्टि प्रदान करके महदुपकार किया है। अत: बुद्धिमानों का यह कर्त्तव्य है कि वे इस प्रकार के अनुपयोगी और भ्रम फैलाने वाले विषयों से सामान्य जनता को दूर रहने के लिए सावधान करते रहें।

ग्रन्थ के नाम में **यज्ञीय** शब्द लिखा है, उसे पाणिनिमुनि के व्याकरणानुसार **यज्ञिय** लिखना चाहिये था। परन्तु दूरभाष पर बात होने पर लेखिका ने **यज्ञीय** को शुद्ध बताया और आचार्य विजयपाल रेवली वाले का प्रमाण दिया। परन्तु यदि **यज्ञीय** शब्द शुद्ध है तो पाणिनि जी को **यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ** (अष्टाध्यायी 5.1.70) सूत्र बनाने की क्या आवश्यकता थी? मनुस्मृति आदि सभी ग्रन्थों में **यज्ञिय** पद मिलता है, उन्हीं की सिद्धि हेतु पाणिनि जो ने सूत्र बनाया था। यदि वे **यज्ञीय** शब्द को शुद्ध मानते तो **यज्ञाच्छश्च** सूत्र भी वहीं बना देते। आशा है वैयाकरण बन्धु इस पर भी विचार करके सत्यासत्य का निर्णय कर लेंगे।

– विरजानन्द दैवकरणि
9416055702

बन्दा वैरागी

☆ **आनन्द देव शास्त्री**, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत)
दिल्ली सरकार

जिस समय दिल्ली की गद्दी पर औरंगजेब आसीन था। उस समय पंजाब में गुरु गोविन्द सिंह का सितारा चमक रहा था। सतलुज के पास बसे रोपड़ शहर तक गुरु गोविन्द सिंह जी का अधिकार होगया था। तब औरंगजेब के आदेश से लाहौर के सूबेदार ने गुरु की सेनाओं पर आक्रमण किया। गुरुजी ने बड़ी वीरतापूर्वक आक्रमण का सामना किया। परन्तु शत्रु सेना अधिक थी। अत: उन्होंने मालोवाल के पास उन्हें घेर लिया। गुरु जी की माता गूजरी तथा जोरावरसिंह एवं फतहसिंह नाम के दो पुत्र घेरे में से बचकर निकल गये। उन्होंने सरहिन्द में गुरु के एक शिष्य के पास आश्रय लिया। फौजदार वजीर खां का दीवान, कुलजस नाम का हिन्दू था। उसे इन तीनों का सुराग लग गया, उसने उन्हें वजीर खां के दरबार में पेश किया। स्त्री तथा बच्चों को मारना धर्म विरुद्ध मानकर, वजीर खाँ ने उस समय तो उन्हें बन्दी बना लिया, लेकिन एक दिन बाद ही उसका मजहबी जनून जाग उठा। तब वजीर खाँ ने लड़कों से पूछा कि यदि तुम्हें छोड़ दिया जाये तो तुम क्या करोगे? शेर के बेटों ने उत्तर दिया। हम सिक्खों को इकट्ठा करेंगे, उन्हें हथियार देकर तुम से लड़ायेंगे और तुम्हें मार देंगे।

वजीर खाँ ने फिर कहा – यदि तुम हार गये तो फिर क्या करोगे? लड़कों ने फिर कहा कि 'हम फिर सेना इकट्ठी करेंगे, फिर या तो तुम्हें मार देंगे या फिर मर जायेंगे।'

इस पर फौजदार का क्रोध भड़क उठा। फौजदार ने आदेश दिया, 'कि या तो तुम मुसलमान बन जाओ, अन्यथा तुम्हें प्राण दण्ड दिया जायेगा।'

लड़कों ने धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं किया। फौजदार की आज्ञा से उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया। उन्हें दीवार में चुनवा दिया गया। माता गूजरी पोतों के दु:ख को न सह सकी तथा परलोक सिधार गई।

गुरु के बच्चों का बलिदान सिक्खों के हृदय में कील की तरह चुभ गया तथा पन्थ में इस बलिदान के कारण बदले की भावना पैदा हो गई।

मृत्यु से पूर्व जब गुरु गोविन्द सिंह दक्षिण में नांदेड यात्रा पर गये तब एक माधवदास नाम वैरागी साधु से उनकी भेंट हुई। यह साधु एक मठ का महन्त था तथा ठाठ-बाठ से रहता था। विद्वान् तथा प्रतिभाशाली भी था। उसके शिष्य उसे पहुंचा हुआ सिद्ध मानते थे। गुरु तथा शिष्य देखते ही एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो गये। माधवदास सब आडम्बर छोड़कर गुरु का सच्चा शिष्य (बन्दा) बन गया। यही बन्दा इतिहास में बन्दा वैरागी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गुरु ने शिष्य को एक तलवार तथा तरकश में से निकाल पांच तीर दीक्षा के रूप में तथा शिक्षाएं भी दी। 1. जन्मभर ब्रह्मचारी रहना, 2. सत्य पर दृढ रहना, 3. अपने को खालसा का सेवक समझना, 4. अलग मत स्थापित करने की चेष्टा मत करना, 5. विजय पर भूलकर अभिमान न करना। तब गुरु जी ने एक पत्र पंजाब के सिक्खों के नाम लिखकर दिया। जिसमें लिखा था कि वे संगठित होकर बन्दा के झंडे के नीचे आकर शत्रु से लड़ें। इस पत्र का पंजाब के सिक्खों पर ज़ादू सा प्रभाव हुआ तथा शीघ्र ही चालीस हजार सिक्ख बन्दा की सेना में एकत्रित हो गये। गुरु के पुत्रों के बलिदान ने उनमें जोश पैदा कर दिया। पहला आक्रमण सरहिन्द पर हुआ। फौजदार वजीर खां ने बड़ी सेना द्वारा बन्दा का मुकाबला किया, किन्तु मुगल बुरी तरह पराजित हुए। बन्दा ने कत्लेआम तथा आग लगाने का आदेश दे दिया। मुसलमानों को बुरी तरह मारा गया तथा सरहिन्द में आग लगा दी। बन्दा की सेना पूरे पंजाब में फैल गई। करनाल तक उसका अधिकार होगया। इसी प्रकार लाहौर पर भी बन्दा का अधिकार होगया।

इस समय दिल्ली की गद्दी पर औरंगजेब का लड़का बहादुरशाह बैठा था, वह दक्षिण में युद्धों में उलझा हुआ था। पीछे से उदयपुर, जोधपुर, जयपुर आदि राज्यों ने विद्रोह कर दिया। वह राजपूतों को कड़ा दण्ड देना चाहता था, किन्तु इसी बीच में उसे मुसलमानों का आर्तनाद सुनाई दिया, वह राजपूतों से शीघ्र सन्धिकर नारनौल होता हुआ सीधा पंजाब पहुंचा और सारी मुगल सेनाओं को पंजाब में ही बुला लिया गया। तब तक सिक्ख सेना असावधान हो चुकी थी। मुगलों के अचानक तीव्र आक्रमण से सिक्ख सेना हार गई तथा जहाँ भी कोई सिक्ख मिलता उसकी चोटी की रस्सी बनाकर पेड़ पर लड़का दिया जाता। जब बन्दा को इस स्थिति का पता चला तो वह शीघ्र ही सम्भल गया, उसमें मैदानी युद्ध व्यर्थ समझ, साढौरा के पास लोहगढ़ नामक किला

जो कि अजेय समझा जाता था, में शरण ली तथा किले पर तोप चढ़ा दी और बन्दूकचिकों का पहरा लगा दिया। बन्दा के आतंक के कारण पहले तो मुगलों की किले पर चढ़ाई करने की हिम्मत नहीं हुई। किन्तु बाद में किला घेर लिया गया और सिक्ख पराजित हुए। बन्दा साधु के वेश में वहाँ से बच निकला तथा सिक्खों को संगठित कर गुरुदासपुर पर हमला कर दिया। किलेदार तथा उसके भतीजे को मार डाला। इस समय बादशाह वहां शिकार खेलने में मस्त था। जब उसे लाहौर पराजय का पता चला तो वह लाहौर की तरफ ससैन्य चला किन्तु तभी उसकी मृत्यु हो गई।

तब दिल्ली में गद्दी के लिए उठक-पठक शुरू होगई और बादशाह का भतीजा फरूख सीयर जोकि अपने को औरंगजेब का अवतार समझता था गद्दी पर बैठा। उधर बन्दा सिक्खों का नेता तो बन गया था, किन्तु वह सिक्खों के पूरे नियमों का पालन नहीं करता था, अत: सिक्ख उससे दूर हटने लगे। कहा जाता है कि मुगलों ने गुरु जी की विधवा को बहकाकर उससे बन्दा के विरुद्ध एक पत्र लिखवाकर प्रचारित कर दिया जिससे सिक्ख बन्दा से दूर हो गये। फर्रुखसीयर ने एक बड़ी सेना के नेतृत्व में लाहौर के सूबेदार को बन्दा को पकड़ने भेजा। बन्दा के पास थोड़ी सी हिन्दू सेना तथा कुछ सिक्ख सेना बची थी। अब बन्दा से मुकाबला नहीं, बन्दा का शिकार करना शेष था, बन्दा गुरुदासपुर के किले में घुस गया। घेरा कठोर था। अन्दर रसद नहीं जा सकी थी, अत: 10 हजार सैनिक भूखे मरने लगे। जब दस में से आठ हजार सैनिक भूख से मर गये तब बाहर निकलकर युद्ध का निश्चय हुआ। कुछ सैनिक युद्ध में मर गये तथा कुछ पकड़े गये। बन्दा भी पकड़ा गया और एक लोहे के पिंजड़े में बन्दकर दिल्ली लाया गया। मरे हुए दो हजार सिक्खों के सिरों को भाले पर टांग मुगल सैनिक उसके आगे पीछे चल रहे थे। कई सौ सिक्ख कैदी उसके आगे पीछे चल रहे थे। बहुत कैदियों का शरीर भेड़ की खाल से ढक कर उन्हें दिल्ली में घुमाया गया। बन्दा का मुंह काला कर उसे ऊँची कलन्दर वाली टोपी पहना हाथी पर बिठा दिल्ली में घुमाया गया। बन्दा के साथियों ने सबकुछ धैर्य से सहा तथा सभी कैदी पन्थ के लिए बलिदान के लिए तैयार थे।

आठवें दिन अभियोग का ढोंग किया गया। बन्दा को पिंजरे से घसीट कर बाहर निकाला गया। उसके चारों तरफ सिक्खों के सिर टंगे भालों की प्रदर्शनी कर रखी थी। दरबारी न्यायाधीश ने पूछा तुमने इतना विद्वान् होते हुए भी ऐसा अत्याचार क्यों किया? बन्दा ने उत्तर दिया, भगवान् ने मुझे दुष्टों को दण्ड देने भेजा था। अब मेरे दण्ड देने की शक्ति दूसरों के हाथ में दे दी है। सब बन्दियों ने वीरतापूर्वक मृत्यु का आलिंगन किया। सरकार ने कहा - जो बन्दी इस्लाम स्वीकार करेंगे, उन्हें छोड़ दिया जायेगा, किन्तु एक बन्दी ने भी इस्लाम स्वीकार नहीं किया। वे लोग एक दूसरे से पहले शहीद होना चाहते थे।

एक सिक्ख नौजवान बन्दी था। उसकी माँ किसी प्रकार उच्चाधिकारियों से माफी माँग अपने पुत्र को छोड़ने का आज्ञा पत्र ले आई। जब

कोतवाल ने उससे कहा कि अब तुम स्वतन्त्र हो। तब उस युवक ने कहा – मैं इस औरत को नहीं जानता। यह मुझ से क्या चाहती है। मैं गुरु का सच्चा शिष्य हूँ। जो दण्ड गुरु को मिलेगा, मैं भी वहीं लूंगा और वह युवक बड़ी खुशी से अपने प्राणों पर खेल गया।

अन्त में गुरु की बारी आई। कुतुबमीनार के पास गुरु को जमीन पर बिठा। उसके छोटे पुत्र को उसकी गोदी में डाल, उसको मार डालने को कहा गया। गुरु के इन्कार करने पर उस बच्चे का पेट चीर, उसका जिगर निकाल गुरु के मुंह में ठूस दिया। फिर छुरे से बन्दा की आँख निकाली गई। फिर उसका बांया पैर काट दिया गया। उसके बाद उसके दोनों हाथ काट दिये गये। अन्त में उसके शरीर के टुकड़े -टुकड़े करके फैंक दिया गया। बन्दा की पत्नी को मुसलमान बनाकर राजवंश की एक बेगम को गुलाम के तौर पर सौंप दिया गया।

जिस फर्रुखसीयर बादशाह के आदेश से यह हत्याकाण्ड हुआ था। कुछ समय बाद ही राज्य प्राप्ति के इच्छुक अन्य मुसलमानों ने उसे गद्दी से उतार जेल में डाल दिया। फर्रुखसीयर ने भूख-प्यास से तड़फ-तड़फकर जेल में ही प्राण त्याग दिये। उसे उसके पापों का दण्ड साथ ही साथ मिल गया। बन्दा बैरागी मर कर भी अमर होगया। ऐसे बलिदानी वीर को शतशः नमन।

111/19, आर्यनगर, झज्जर,
मो. 9996227377

हर्ष सूचना

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित आर्षकन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में नवीन ब्रह्मचारिणियों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। अभी छठी कक्षा से नवम कक्षा तक प्रवेश लिया जा रहा है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र
सोमवीर शास्त्री (महामन्त्री)
आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला
मो० 9999299300

गुरुकुल झज्जर में नया प्रवेश प्रारम्भ

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर में नवीन छात्रों के प्रवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। प्रवेश के इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश लेने वाला छात्र कम से कम पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये।

प्रवेश हेतु परीक्षा तिथि
16 जून 2019 रविवार
अधिक जानकारी हेतु दूरभाष से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र

आचार्य 9416055044
कार्यालय 9416661019

आर्य आर्युवेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

की विशेष ओषधियां

गन्धकारिष्ट

यह औषध पेट के प्रत्येक रोग के लिए रामबाण है पेट दर्द तो पहली मात्रा लेते ही बन्द हो जाता है

मात्रा :– 20 बूंद से 30 बूंद जल में मिलाकर लें।

मधुमेहासव

गुण :– मधुमेह की सर्वश्रेष्ठ एकमात्र औषध है।

सेवन :– 1 से 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजरोपरान्त लें।

अशोकारिष्ट

गुण : स्त्रियों के श्वेत–प्रदर, रक्त–प्रदर, गर्भस्त्राव रक्तपित, कटिपीड़ा, मासिक धर्म की अनियमितता आदि योनी–सम्बन्धी विकारों का नाशक।

मात्रा :– 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

अश्वगन्धारिष्ट

गुण:– मूर्च्छा, मिरगी, पागलपन, मस्तिष्क विकार, स्त्रियों के हिस्टीरिया, ज्ञान–तन्तुओं की निर्बलता एवं वायु–सम्बन्धी रोगों को दूर करता है

सेवक :– 2 तोला औषध समान जल मिलाकर प्रातः सायं भोजनोपरान्त लें

रोहितारिष्ट

गुण :– जिगर–तिल्ली, वायु गोला, गैस आदि में लाभकारी। पेट का रोग जब किसी भी औषध से ठीक न हो तो इसका चमत्कार देखें।

मात्रा :– 1 से 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

सितोपलादि चूर्ण

इसके सेवन से अरुचि, खांसी, क्षय रोग, श्वास रोग जीर्णज्वर और पाचनशक्ति की निर्बलता दूर होता है।

सेवक :– 1 मासा से 3 मासा तक प्रातः सायं शहद व 6 माशे घी में मिलाकर चाटना चाहिए। सूखी खांसी में चावल योगन से लें।

अमृतारिष्ट

गुण :–जीर्णज्वर, विषमज्वर तथा तपोदिक के ज्वर में लाभकारी है

मात्रा :– 1 से 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

गैसहर चूर्ण

यह चूर्ण पेट दर्द, गैस, अफारा, कब्ज व हर प्रकार के उदर रागों में उपयोगी है।

मात्रा :– 2 से 4 ग्राम तक गर्म पानी से लें।

गोक्षुरासव

गुण :– मूत्रकृच्छ्र, सुजाक, मूत्र का रूक–रूक कर वा जलन होकर आना आदि मूत्र सम्बंधी रोगों एवं पित्तप्रमेह के लिए उत्तम है।

मात्रा :– 2 तोले औषद्य समान जल में मिलाकर भोजनोपरान्त लें

अविपतिकर चूर्ण

यह पैत्तिक विकारों के लिए बहुत उपयोगी है अम्लपित्त की पित्त की विकृति से ही यह रोग बढ़ता है। उस विकृति को दूर करने के लिए इस चूर्ण का उपयोग किया जाता है। यह विरेचक होने के कारण दस्त भी साफ लाता है और कब्जियत दूर करता है। इसके सेवन करने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है। भूख लगती है।

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१. व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२. अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३. कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४. लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५. फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६. अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	६५०-००
७. काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८. दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९. दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	३५०-००
१०. निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११. योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२. सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३. मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४. महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६. ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७. वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८. मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९. दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०. धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१. वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२. देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३. सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४. संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५. आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६ व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७. स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८. चारों वेद मूल	८८०-००
२९. सामपदसंहिता	२५-००
३०. सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१. महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२. दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३. घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४. संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५. स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६. स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७. ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८. प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९. स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०. रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१. महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२. प्राचीन भारत में रा[illegible]न्दिर	२००-००
४३. नौरंगाबाद क[illegible] पन्मू[illegible]	२५०-००
४४. अगरोहा की [illegible]मूति[illegible]	८००-००
४५. प्राचीन ताम्रपत्र एवं [illegible]	२००-००
४६. प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७. छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८. आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री

स्थान

डा०

जिला

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।